॥ श्रीः ॥

तुलसीसतसई ।

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीविरचित ।

जिसमें

परमात्मा परमेश्वरके शरणागतविषयमें ज्ञानवार्ता
भक्तिरहस्य आदिकों विमल रीतिसे वर्णन है ।

जिसको

लोकोपकारार्थ—

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

छापकर प्रसिद्ध की ।

सम्वत १९७८ शक १८४३.

॥ श्रीः ॥

तुलसीसतसई ।

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीविरचित ।

जिसमें

परब्रह्म परमेश्वरके चरणारविन्दमें जनपावनी
भक्तिदृढार्थ सातसौ विमल दोहे वर्णित हैं ।

जिसको

लोकोपकारार्थ-

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

छापकर प्रसिद्ध की ।

सम्वत् १९७८ शके १८४३.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७वीं गली खम्बाटालेन निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये मुद्रितकर यहीं प्रकाशित किया ।

श्रीः

तुलसीसतसई।

प्रथमःसर्गः ।

दोहा–नमोनमोश्रीरामप्रभु, परमातमपरधाम ॥
जेहिसुमिरतसिधहोतहैं,तुलसीजनमनकाम॥ १॥
रामबामदिशिजानकी, लषणदाहिनीओर ॥
ध्यानसकलकल्याणकर, तुलसीसुरतरुतोर॥२॥
परमपुरुषपरधामवर, जापरअपरनआन ॥
तुलसीसोसमुझतसुनत, रामसोइनिर्वान ॥ ३ ॥
सकलसुखदगुणजासुसो, रामकामनाहीन ॥
सकलकामप्रदसर्वहित, तुलसीकहहिंप्रबीन ॥४॥
जाकेरोमैंरोमप्रति, अमितअमितब्रह्मण्ड ॥
सोदेखततुलसीप्रकट,अमलसुअचलप्रचण्ड ॥५॥

जगतजननिश्रीजानकी, जनकरामशुभरूप ॥
जासुकृपाअतिअघहरणि,करणिविवेकअनूप ।६।
तातमातुपरजासुके, तासुनलेशकलेश ॥
तेतुलसीतजिजातकिमि, तजिघरतरपरदेश॥७ ॥
पिताविवेकनिधानवर, मातुदयायुतनेह ॥
तासुसुवनकिमिपाइहै, अनतअटनतजिगेह ॥ ८॥
बुद्धिविनयगतिहीनशिशु,सुपथकुपथगतजान ॥
जननिजनकतहिकिमितजै, तुलसीसरिसअजान॥
माततातसियरामरुख, बुधिविवेकपरमान ॥
हरतअखिलअघतरुनतर,तवतुलसीकछुजान १०
जिनतेउद्भववरविमव, ब्रह्मादिकसंसार ॥
सुगतितासुतिनकीकृपा,तुलसीबदहिविचार। ११
शशिरविसीतारामनभ, तुलसीउरसिप्रमान ॥
उदितसदाअथवतनसो, कुवलिततमकरहान १२॥
तुलसीकहतविचारगुरु, रामसरिसनहिंआन ॥
जासुकृपाशुचिहोतरुचि,विशदविवेकप्रमान १३॥

रामस्वरूपअनूपअल, हरतसकलमलमूल ॥
तुलसीमर्महियोगलहि, उपजतसुखअनुकूल १४
रेफरमितपरमातमा, सहअकारसियरूप ॥
दीरघमिलिविधिजीवइव, तुलसीअमलअनूप १५
अनुस्वारकारणजगत, श्रीकरकरनअकार ॥
मिलतअकारमकारसों, तुलसीहरिदातार॥ १६ ॥
ज्ञानविरागैभक्तिसह, मूरतितुलसीपेषि ॥
वर्णतगतिमतिअनुहरत, महिमाविशदविशेषि १७
नाममनोहरजानिजिय, तुलसीकरिपरमान ॥
वर्णविपर्ययभेदते, कहौंसकलशुभजान ॥ १८ ॥
तुलसीशुभकारणसमुझि, गहतरामरसनाम ॥
अशुभहरणशुचिशुभकरण, भक्तिज्ञानगुणधाम १९
तुलसीरामसमानवर, सपनेहुअपरनआन ॥
तासुभजनरतिहीनअति, चाहसिगतिपरमान २०
अहिरसनाथनधेनुरस, गणपतिद्विजगुरुवार ॥
माधवसितसियजन्मतिथि, सतसैयाअवतार२१

मरणहरणअतिअमितविधि, तत्त्वअर्थकविरीति
संकेतिकसिद्धान्तमत, तुलसीवदतविनीति २२॥
विमलबोधकारणसुमति, सतसैयासुखधाम ॥
गुरुमुखपढिगतिपाइहै, विरतिभक्तिअभिराम२३
मनभयजरसतलागयुत, प्रकटछन्दश्रुतहोइ ॥
सोघटनाशुभदासदा, कहतसुकविसबकोइ २४॥
जतसमानततवानलघु,अपरवेदगुरुमान ॥
संयोगादिविकल्पपुनि,पदनअन्तकहजान२५ ॥
दीरघलघुकरितहँपठव, जहँसुखलहिविश्राम ॥
प्राकृतप्रकटप्रभावइह, जनितबुधाबुधबाम २६
दुइगुरुसीतासारगण, रामसोगुरुलघुहोइ ॥
लघुगुरुरमाप्रतक्षगन, युगलहुहरगणसोइ ॥२७॥
सहसनामभुनिभनितसुनि, तुलसीबल्लभनाम ॥
सकुचतियहहँसिनिरखिसिय,धरमधुरन्धरराम॥
दम्पतिरसरसनादशन, परिजनवदनसुगेह ॥
तुलसीहरहितवरणशिशु,सम्पतिसरलसनेह २९॥

हियनिरगुणनैननसगुण, रसनारामसुनाम ॥
मनहुँपुरटसम्पुटलसन, तुलसीललितललाम ३०
प्रभुगुणगणभूषणवसन, वचनविशेषसुदेश ॥
रामसुकीरतिकामिनी, तुलसीकरतबकेश॥३१॥
रघुवरकीरतितियवदन, इवकहैतुलसीदास ॥
शरदप्रकाशअकाशछबि,चारुचिबुकविलजास३२
तुलसीशोभतनखतगण, शरदसुधाकरसाथ ॥
मुक्ताझालरझलकजनु,रामसुयशशिशुहाथ ३३॥
आतममध्यविवेकविनु, रामभजतअलसात ॥
लोकसहितपरलोककी,अवशविनाशीबात॥३४॥
बकमरालमानसतजे, चन्द्रशीतरविघाम ॥
मोरमदादिकजोतजै, तुलसीतजैनराम ॥ ३५ ॥
आसनदृढ़आहारदृढ़, सुमतिज्ञानदृढहोय ॥
तुलसीबिनाउपासना, बिनुदुलहेकीजोय॥३६॥
रामचरणअवलम्बबिनु, परमारथकीआश ॥
चाहतवारिदबुन्दगहि,तुलसीचढनअकाश३७ ॥

रामनामतरुमूलरस, अष्टपत्रफलएक ॥
युगलसन्तशुभचारिजग, वर्णतनिगमअनेक ३८॥
रामकामतरुपरिहरत, सेवतकलितरुठूंठ ॥
स्वारथपरमारथचहत, सकलमनोरथझूंठ ॥३९॥
तुलसीकेवलकामना, रामचरितआराम ॥
निशिचरकलिकरिनिहततरु,मोहिंकहतविधिवाम
स्वारथपरमारथसकल,सुलभएकहीओर ॥
द्वारदूसरेदीनता, उचितनतुलसीतोर ॥ ४१ ॥
हितसनहितरतिरामसन, रिपुसनवैरविहाव ॥
उदासीनसंसारसन, तुलसीसहजसुभाव ॥ ४२॥
तिलपरराखैसकलजग, विदितविलोकतलोग ॥
तुलसीमहिमारामकी, कोजगजाननयोग ॥४३॥
जहांरामतहंकामनहिं, जहाँकामनहिंराम ॥
तुलसीकबहींहोतनहिं, रविरजनीइकठाम॥४४॥
रामदूरमायाप्रबल, घटतिजानिमममाहिं ॥
बढतिभूरिरविदूरिलखि,शिरपरपगुतरछाहिं४५॥

सम्पतिसकलजगत्तकी, श्वासासमनहिंहोय ॥
श्वाससोइतजिरामपद,तुलसीअलगनखोय४६॥
तुलसीसोअतिचतुरता, रामचरणलवलीन ॥
परमनपरधनहरणकहँ,गणिकापरमप्रवीन॥४७॥
चतुराईचूल्हेपरै, यमगहिज्ञानहिखाय ॥
तुलसीप्रेमनरामपद; सबजरमूलनशाय ॥४८॥
प्रेमशरीरप्रपंचरुज, उपजीबडीउपाधि ॥
तुलसीभलीसोवैदई, बेगिबांधिईव्याधि ॥ ४९॥
रामविटपतरविशदवर, महिमाअगमअपार ॥
जाकहँजहँलगिपहुँचहै,ताकहँतहँलगिडार॥५०॥
तुलसीकोशलराजभजु, जनिचितवैकहुँओर ॥
पूरणराममयङ्कमुख, करुनिजनयनचकोर॥५१॥
ऊँचेनीचेकहुँमिलै, हरिपदपरमपियूष ॥
तुलसीकामभयूखते, लागकौनेउरूष ॥ ५२ ॥
स्वामीहोनोसहजहै, दुलभहोनोदास ॥
गाडरलायेऊनको, लागीचरैकपास ॥ ५३ ॥

चलबनीतिमगरामपद, प्रेमनिबाहबनीक ॥
तुलसीपहिरियसोवसन;जोनयवारतफीक ॥५४॥
तुलसीरामकृपालुते, कहिसुनावगुणदोष ॥
होउदूबरीदीनता, परमपीतसन्तोष ॥ ५५ ॥
सुमिरनसेवनरामपद, रामचरणपहिचान ॥
ऐसेहुँलाभनलल्कसन, तोतुलसीहितहान ॥५६॥
सबसंगीबाधकभये, साधकभयेनकोय ॥
तुलसीरामकृपालुते, भलीहोयसोहोय ॥ ५७ ॥
तुलसीमिटैनकल्पना, गयेकल्पतरुछाहँ ॥
जबलगिद्रवैनकरिकृपा,जनकसुताकोनाँह॥५८॥
विमलविलगसुखनिकटदुख,जीवनसमयसुरीति
रहितराखियेरामकी, तजेतउचितअनीति॥५९॥
जायकहबकरतूतिबिनु, जाययोगविनक्षेम ॥
तुलसीजायउपायसब, विनारामपदप्रेम ॥६०॥
तुलसीरामहिंपरिहरे, निपटहानिसुनुमोद ॥
जिमिसुरसरिगतसलिलवर,सुरासरिसगंगोद ६१

हरेचरहिंतापहिबरे, फरेपसारहिहाथ ॥
तुलसीस्वारथमीतजग, परमारथरघुनाथ ॥६२॥
तुलसीखोटेदासकर, राखतरघुवरमान ॥
ज्योंमूरखपूरोहितहि, देतदानयजमान ॥ ६३ ॥
ज्योंजगवैरीमीनको, आपुसहितपरिवार ॥
त्योंतुलसीरघुनाथविन, आपदिशानिकार ६४
तुलसीरामभरोसशिर, लियेपापधरिमोट ॥
ज्योंव्यभिचारीनारिकहँ,बडीखसमकीओट६५॥
स्वामीसीतानाथजी, तुमलगिमेरीदौर ॥
तुलसीकागजहाजको, सूझतऔरनठौर ॥ ६६ ॥
तुलसीसबछलछांडिकै, कीजैरामसनेह ॥
अन्तरपतिसोहैकहा, जिनदेखीसबदेह ॥ ६७ ॥
सबहीकोपरखेलखे, बहुतकहेक्याहोय ॥
तुलसीतेरोरामतजि, हितजगऔरनकोय॥ ६८॥
तुलसीहमसोंरामसों, भलोमिलोहैसूत ॥
छांड़ेबनैनसँगरहे, ज्योंघरमाहँकपूत ॥ ६९ ॥

कोटिविघ्नशंकटविकट, कोटिशत्रुजोसाथ ॥
तुलसीबलनहिंकरिसकैं, जोसुदृष्टरघुनाथ॥७०॥
लग्नमुहूर्तयोगबल, तुलसीगनतनकाहि ॥
रामभयेजेहिदाहिने, सबैदाहिनेताहि ॥ ७१ ॥
प्रभुप्रभुताजाकहँदई, बोलसहितगहिबाँह ॥
तुलसीतेगाजतफिरहिं, रामछत्रकीछांह ॥ ७२ ॥
साधनसांसतिसबसहत, सुमनसुखदफललाहु ॥
तुलसीचातकजलदकी,रीझिबूझिबुधकाहु॥७३॥
चातकजीवनजलदकहँ, जानतसमयसुरीति ॥
लखतलखतलखिपरतहै, तुलसीप्रेमप्रतीति ७४॥
जीवचराचरजहँलगे, हैसबकोप्रियमेह ॥
तुलसीचातकमनबसो, घनसोंसहजसनेह॥७५॥
डोलतबिपुलविहंगबन, पियतपोखरीबारि ॥
सुयशधवलचातकनवल,तोरभुवनदशचारि ७६॥
सुखमीठेमानसमलिन, कोकिलमोरचकोर ॥
सुयशललितचातकवलित, रहोभुवनभरितोर७७

माँगतडोलतहैनहीं, तजिघरअनतनजात ॥
तुलसीचातकभक्तकी, उपमादेतलजात ॥ ७८॥
तुलसीतीनोंलोकमहँ, चातकहीकोसाथ ॥
सुनियतजासुनदीनता, कियेदूसरेनाथ ॥ ७९ ॥
प्रीतिपपीहापयदकी, प्रकटनईपहिचान ॥
याचकजगतअधीनइन,कियेकनौड़ोदान॥८०॥
ऊँचीजातपपीहरा, नीचोपियतननीर ॥
कैयांचैघनश्यामसों, कैदुखसहैशरीर ॥ ८१ ॥
कैवरषैघनसमयशिर, कैभरिजन्मनिराश॥
तुलसीचातकयाचकहिं, तऊतिहारीआश ८२॥
चढ़तनचातकचितकबहुँ, प्रियपयोदकेदोष ॥
यातेप्रेमपयोधिवर, तुलसीयोगनदोष ॥८३॥
तुलसीचातकमांगनो, एकएकघनदानि ॥
देतसोभूभाजनभरत, लेतघूंटभरिपानि ॥ ८४ ॥
हैअधीनयाचत नहीं, शीशनायनहिंलेय ॥
ऐसेमानीमांगनहिं, कोबारिदबिनदेय ॥ ८५ ॥

पविपाहनदामिनिगरज,अतिझकोरखरखीझि ॥
दोषनप्रीनपरोषलखि, तुलसीरागहिरीझि॥८६॥
कोनजियायेजगतमहँ, जीवनदायकपानि ॥
प्रयोकनौड़ोचातकहिं,पयदप्रेमपहिंचानि॥८७।
मानराखिबोमांगिबो, पियसोंसहजसनेह ॥
तुलसीतीनोंतबफबै, जबचातकमनलेह ॥ ८८॥
तुलसीचातकहीफबै, मानराखिबोप्रेम ॥
वक्रबूंदलखिस्वातिको, निदरिनिबाहतनेम ८९
उपलबरसिगर्जततरजि, डारतकुलिशकठोर ॥
चितवकिचातकजलदतजिकबहुँआनकीओर ९०
वरषिपरुषपाहनजलद, पक्षकरैटुकटूक ॥
तुलसीतदपिनचाहिये, चतुरचातकहिचूक ९१॥
रटतरटतरसनालटी, तृषासूखिगोअंग ॥
तुलसीचातकके हिये, नितनूतनहितरंग ॥ ९२ ॥
गंगायमुनासरस्वती, सातसिन्धुभरिपूर ॥
तुलसीचातकके मते, बिनस्वातीसबधूर ॥९३ ॥

तुलसीचातकके मते, स्वातीपियत न पानि ॥
प्रेमतृषा बढ़ती भली, घटै घटैगी कानि ॥ ९४ ॥
सरसरिता चातक तजै, स्वाती सुधि नहिं लेइ ॥
तुलसी सेवक वश कहा, जो साहब नहिं देइ ॥९५॥
आश पपीहा पयद की, सुनहु हो तुलसीदास ॥
जो अँचवै जल स्वाति को, परिहरि बारह मास ९६
चातक घन तजि दूसरे, जियत न नाईं नारि ॥
मरत न मांगे अर्द्धजल, सुरसरिहू को वारि ॥ ९७ ॥
व्याधा बधो पपीहरा, परो गंगजल जाय ॥
चोंच मूँदि पीवै नहीं, धिग पियनो प्रण जाय ॥९८॥
वधिक बधो परि पुण्यजल, उपर उठाई चोंच ॥
तुलसी चातक प्रेमपट, मरत न लायो खोंच ॥९९॥
चातक सुतहि सिखावनित, आन नीर जनि लेहु ॥
येह मरे कुल को धरम, एक स्वाति सों नेहु ॥ १०० ॥
दरशन परशन आन जल, विनु स्वाती सुनु तात ॥
सुनत चेचुवा चित चुभो, समुझि नीति बर बात १०१

तुलसीसुतसेकहतहैं, चातकबारम्बार ॥
तातनतरपणकीजियो, विनाबारिधरबार॥१०२॥
बाजचंगुगतचातकहि, भईप्रेमकीपीर ॥
तुलसीपरवशहाड़मम, परिहैपुहुमीनीर ॥१०३॥
अण्डफोरिकियचैंतुवा, तुषापरोनीहार ॥
गहिचंगुलचातकचतुर, डारचोबारंबार ॥१०४॥
होयनचातकपातकी, जीवनदानिनमूढ ॥
तुलसीगतिप्रहलादकी, समुझिप्रेमपदगूढ़ १०५
तुलसीकेमतचातकहि, केवलप्रेमपियास ॥
पियतस्वातिजलजानजग, तावतबारहमास १०६
एकभरोसोएकबल, एकआशविश्वास ॥
स्वातिसलिलरघुनाथवर, चातकतुलसीदास १०७
आलबालमुक्ताहलनि, हियसनेहतरुमूल ॥
हेरहेरुचितचातकहि, स्वातिसलिलअनुकूल १०८
रामप्रेमविनदूबरे, रामप्रेमसहपीन ॥
विशदसलिलसरवरवरन, जनतुलसीमनमीन १०९

आपबधिकवरवेषधारि, कहैकुरंगमराग ॥
तुलसीज्योंमृगमनमुरे, परैप्रेमपटदाग ॥११०॥

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासविरचितायां सप्तशतिकायां प्रेमभक्तिनिर्देशः प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

द्वितीयःसर्गः ।

दोहा-खेलतबालकव्यालसँग,पावकमेलतहाथ॥
तुलसीशिशुपितुमातुइव, राखतसियरघुनाथ१॥
तुलसीकेवलरामपद, लागैसरलसनेह ॥
तौघरघटवनवाटमहँ, कतहुँरहैकिनदेह ॥ २ ॥
कैममताकरुरामपद, कैममताकरुहेल ॥
तुलसीदोमहँएकअब, खेलछांडिछलखेल ॥३॥
कैतोहिंलागहिंरामप्रिय, कैतुरामप्रियहोहि ॥
दुइमहँरुचितसुगमसमुझि, तुलसीकरतबतोहि ४

रावणारिकेदाससँग, कायरचलहिंकुचाल ॥
खरदूषणमारीचसम, मूढ़भयेवशकाल ॥ ५ ॥
तुलसीपतिदरबारमहँ; कमीवस्तुकछुनाहिं ॥
कर्म्महीनकलपतफिरत, चूकचाकरीमाहिं ॥६॥
रामगरीबनेवाजहैं, राजदेतजनजानि ॥
तुलसीमनपरिहरतनहिं, घुरबिनियांकीबानि७॥
घरकीन्हेघरहोतहै; घरछांडेघरजाय ॥
तुलसीघरवनबीचही, रहोप्रेमपुरछाय ॥८॥
रामरामरटिबोभलो, तुलसीखातनखाय ॥
लरिकाईतेपैरिबो, धोखेबूडिनजाय ॥ ९ ॥
तुलसीविलमनकीजिये, भजिलीजैरघुवीर ॥
तनतरकशतेजातहै, श्वाससारसातीर ॥१०॥
रामनाम सुमिरतसुयश, भाजनभयेकुजाति ॥
कुतरुकुसुरपुरराजबन, लहतभुवनविख्याति ११
नाममहातमसाखिसुनु, नरकीकेतिकबात ॥
सरवरपरगिरिवरतरे, ज्योतरुवरकेपात ॥ १२ ॥

ज्ञानगरीबीगुणधरम, नरमवचननिरमोष ॥
तुलसीकबहुँनछांडिये, शीलसत्यसंतोष ॥१३॥
अशनवसनसुतनारिसुख, पापिहुकेघरहोइ ॥
संतसमागमरामधन, तुलसीदुर्लभदोइ ॥ १४ ॥
तुलसीतीरहिकेबसे, अवशिपाइयेथाह ॥
वेगहिजायनपाइये, सरसरिताअवगाह ॥ १५ ॥
डगअन्तरमगअगमजल, जलनिधिजलसंचार ॥
तुलसीकरियाकर्मवश, बूडततरतनबार ॥१६ ॥
तुलसीहरिअपमानते, होतअकाजसमाज ॥
राजकरतरजमिलिगयो, सदलसकुलकुरुराज १७
तुलसीमीठवचनते, सुखउपजतचहुँओर ॥
वशीकरणइकमंत्रहै, परिहरुवचनकठोर ॥१८॥
रामकृपातेहोतसुख, रामकृपाबिनजात ॥
जानतरघुवरभजनते, तुलसीशठअलसात १९॥
सन्मुखह्वैरघुनाथके, देहुसकलजगपीठि ॥
तजकेचूरीउरगकहँ, होतअधिकअतिदीठि २०॥

मर्यादादूरहिरहे, तुलसीकियेविचार ॥
निकटनिरादरहोतहै, जिमिसुरसरिवरवार २१॥
रामकृपानिधिस्वामिमम, सबविधिपूरणकाम ॥
परमारथपरधामवर, सन्तसुखदबलधाम॥२२ ॥
रामहिजानहिंरामरटे, भजुरामहितजुकाम ॥
तुलसीरामअजाननर, किमिपावहिंपरधाम २३॥
तुलसीपतिरतिअंकसम, सकलसाधनासून ॥
अंकरहितकछुहाथनहिं, सहितअंकदशगून २४॥
तुलसीअपनेरामकहँ, भजनकरहुइकअंक ॥
आदिअन्तनिरबाहिबो, जैसेनवकोअंक ॥२५॥
दुगुनेतिगुनेचौगुने, पंचषष्टऔसात ॥
आठौतेपुनिनवगुने, नवकेनवरहिजात ॥ २६ ॥
नवकेनवरहिजातहैं, तुलसीकियेविचार ॥
त्योंरामइमिजगतमें, नहीं द्वैतविस्तार ॥ २७ ॥
तुलसीरामसनेहकरु, त्यागुसकलउपचारु ॥
जैसेघटतनअंकनव, नवकेलिखतपहारु ॥ २८ ॥

अंकअगुणआखरसगुण, समुझउउभयप्रकार ॥
पोयेराखेआपभल, तुलसीचारुविचार ॥ २९ ॥
यहिविधितेसबराममय, समझेहुसुमतिनिधान॥
यातेसकलविरोधतजु,भजुसबसमुझनआन ॥३०
रामकामनाहीनपुनि,सकलकामकरतार ॥
याहीतेपरमातमा, अव्ययअमलउदार ॥ ३१ ॥
जोकछुचाहतसोकरत, हरतभरतगतभेद ॥
काहुसुखदकाहूदुखद, जानतहैंबुधवेद ॥ ३२ ॥
सन्तकमलमधुमासकर, तुलसीवरणविचार ॥
जगसरवरतरभरणकर, जानहुजलदातार ॥३३॥
एकसृष्टिमहँजाहिविधि, प्रकटतीनतरभेद ॥
सात्विकराजसतमसहित,जानतहैंबुधवेद ॥३४॥
ताविधिरघुवरनामकहँ, वर्त्तमानगुणतीन ॥
चन्द्रभानुअपिअमलविधि,हरिहरकहहिंप्रवीन३५
अनलरकारअकाररवि, जानुमकारमयंक ॥
हरिआकाररकारविधि,मनमहेशनिःशंक ॥३६॥

बननज्ञानकहँदहनकर, अनलप्रचण्डरकार ॥
हरिआकारहरमोहतम,तुलसीकहहिंविचार ३७॥
त्रिविधतापहरशशिसतर, जानहुपरमप्रकार ॥
विधिहरिहरगुणतीनिको,तुलसीनामअधार ॥३८
भानुकृशानुमयंकको, कारणरघुवरनाम ॥
विधिहरिशम्भुशिरोमणी,प्रणतसकलसुखधाम३९
अगुणअनूपसगुणनिधि, तुलसीजानतराम ॥
करतासकलजगत्तको,भरतासबमनकाम ॥४०॥
छत्रमुकुटसमविद्धिअल, तुलसीयुगलहलन्त ॥
सकलवर्णशिरपररहत,महिमाअमलअनन्त ॥४१
रामानुजसद्गुणविमल, श्यामरामअनुहार ॥
भरताभरतसोजगतको,तुलसीलसतअकार॥४२॥
राजतराजसतानुजब, वरधरणीधरधीर ॥
विधिविहरतअतिआसुकरि,तुलसीजनगणपीर४३
हरणकरणसंकटसतर, समरधीरबलधाम ॥
मासहेशअरिदवनवर,लषणअनुजअरिकाम॥४४

रामसदासमशीलघर,सुखसागरपरधाम ॥
अजकारणअद्वैतनित,समतरपदअभिराम ॥४५॥
होनहारसुहजानसब, विभवबीचनहिंहोत ॥
गगनगिरहकारिबोकबै, तुलसीपढतकपोत॥४६॥
तुलसीहोतसिखेनहित, तनगुणदूषणधाम ॥
भषणसिखिनकवनेकह्यो,प्रकटविलोकहुकाम ४७
गिरतअण्डसरुपुटअरुण,जलजपक्षअनयास ॥
अललसुवनउपदेशकेहि,जातसुउलटिअकास ४८
विविधचित्रजलपत्रबिच;अधिकनूनसमसूर ॥
कबकौनेतुलसीरचै,केविधिपक्षमयूर ॥ ४९ ॥
काकसुतागृहनाकरे,यह अचरजबड़बाय ॥
तुलसीकहिउपदेशसुनि,जनितपिताघरजाय ५०
सुपथकुपथलीन्हेंजनित,स्वस्वभावअनुसार ॥
तुलसीसिखवतनाहिंशिशु,मूककहननमजार ५१
तुलसीजानतहैसकल,चैतनमिलतअचेत ॥
कीटजातउड़ितियनिकट,बिनहिंपढ़ेरतिदेत॥५२॥

होनहारसबआपुते, वृथाशोचकरजौन ॥
कुंजशृंगतुलसीमृगन,कहहुअमेटतकौन ॥ ५३ ॥
सुखचाहतसुखमेंबसत,हैसुखरूपविशाल ॥
सन्ततजाविधिमानसर, कबहुँनतजतमराल ५४॥
नीतिप्रीतियशअयशगति,सबकहँशुभपहिचान ॥
वस्तीहस्तीहस्तिनी,देतनपतिरतिदान ॥ ५५ ॥
तुलसीअपनेदुखदते, कोकहुरहतअजान ॥
कीशकुंतअंकुरवनहिं,उपजतकरतनिदान ॥५६ ॥
यथाधरणिसबबीजमें, नखतअकाशनिवास ॥
तथारामसबधर्ममय, जानततुलसीदास ॥५७॥
पुहुमीपानीपावकहु, पवनहुमाहँसमात ॥
ताकहँजानतरामअपि,बिनुगुरुकिमिलखिजात ॥
अगुणब्रह्मतुलसीसोई, सगुणविलोकतसोइ ॥
दुखसुखनानाभाँतिको,तेहिविरोधतेहोइ ॥ ५९॥
शूरयथागणजीतिअरि,पलटिआवचलिगेह ॥
तिमिगतिजानहिरामकी,तुलसीसंतसनेह ॥६०॥

परमातमपदरामप्रभु, तीजेसंतसुजान ॥
जेजगमहँविचरहिंधरे, देहविगतअभिमान ॥६१॥
चौथीसंज्ञाजीवकी, सदारहतरतकाम ॥
भ्रमणसेतनरामपद, निशिवासरवशबाम ॥ ६२॥
सुखपायेहर्षतहँसत, खीझतलहेविशाद ॥
प्रकटतदुरतनिरयपरत, केवलरतविषस्वाद ॥६३॥
नानाविधिकीकल्पना, नानाविधिकोसोग ॥
सूक्षमऔस्थूलतन, कबहुँतजतनहिंरोग ॥ ६४ ॥
जैसेकुष्ठीकोसदा, गलितरहतदोउदेह ॥
बिन्दहुकीगवितैसिये, अन्तरहूगतिएह ॥ ६५ ॥
त्रिधादेहगतिएकविधि, कबहूँनागतिआन ॥
विविधकष्टपावतसदा, निरखहिंसन्तसुजान६६॥
रामहिंजानेसंतवर, संतहिंरामप्रमान ॥
संतनकेबलरामप्रभु, रामहिंसंतनआन ॥ ६७ ॥
तातेसंतदयालुवर, देहिंरामधनरीति ॥
तुलसीयहजियजानिकै, करियबहठिअतिप्रीति ॥

तुलसीसंतसुअम्बतरु फूलिफरहिंफरहेतु ॥
इततेवैपाहनहनन, उततेवैफलदेतु ॥ ६९ ॥
दुखसुखदोनोंएकसम, संतनकेमनमाहिं ॥
मेरुउदधिगतिझकुरजिमि, आरभीजिगोनाहिं७०
तुलसीरामसुजानको, रामजनावैसोइ ॥
रामहिजानैरामजन, आनकबहुँनाहोइ ॥ ७१ ॥
सोगुरुरामसुजासुसम, नहींविषमतालेश ॥
ताकीकृपाकटाक्षते, रहेनकठिनकलेश ॥ ७२ ॥
गुरुकहतबसमझैसुनै, निजकरतबकरभोग ॥
कहतबगुरुकरतबकरै, मिटैसकलभवसोग॥७३॥
शरणागततेहिरामके, जिन्हहियधीसियरूप ॥
जापदनीघरउदयभय, नाशैभ्रमतमकूप ॥ ७४ ॥
जापदपायेपाइये, आनँदपदउपदेश ॥
संशयशमननशायसब,पावैपुनिनकलेश ॥७५॥
मेधासीतासमसमुझ, गुरुविवेकसमराम ॥
तुलसीसियसमसोसदा,भयोविगतमगवाम ७६॥

आदिमध्यअवसानगति, तुलसीएकसमान ॥
तेईसन्तस्वरूपशुभ, जेअनीतगतिआन ॥७७॥
एईशुद्धउपासना, पराभक्तिकीरीति ॥
तुलसीयहिमगपगुधरे, रहेरामपदप्रीति ॥ ७८ ॥
तुलसीविनगुरुदेवके, किमिजानैकहुकोय ॥
जहँतेजोआयोसोहै, जायजहां हैसोय ॥ ७९ ॥
अपगतयेसोईअवनि, सोपुनिप्रकटपताल ॥
कहांजनमअपिमरणअपि, समुझहिसुमतिरसाल॥
संगदोषतेभेदअस, मधुमदिरामकरन्द ॥
गुरुगमतेदेखहिंप्रकट, पूरणपरमानन्द ॥ ८१ ॥
डाबरसागरकूपगत, भेददिखाईदेत ॥
हैएकैदूजेनहीं, द्वैतआनकेहेत ॥ ८२ ॥
गुणगतनानाभाँतितेहि, प्रकटतकालहिपाय ॥
जानजायगुरुज्ञानते, बिनजानेभरमाय ॥ ८३ ॥
तुलसीतरुफूलतफलत, जाविधिकालहिपाय ॥
तैसेहीगुणदोषते, प्रकटतसमयसुभाय ॥ ८४ ॥

दोषहुगुणकीरीतियह, जानुअनलगतिदेखि ॥
तुलसीजानतसोसदा, जेहिविवेकसुविशेषि८५॥

गुरुतेआवतज्ञानउर, नाशतसकलविकार ॥
यथानिलयगतिदीपके, मिटतसकलअँधियार८६

यद्यपिअवनिअनेकसुख, तोयताहुरसताल ॥
सन्ततुलसीमानसर, तदपिनतजहिंमराल ८७॥

तुलसीतोरततीरतरु, मानसजहँसविडार ॥
विगतनलिनिअलिमलिनजल,सरसरिहूबढ़िआर

जोजलजीवनजगतको, परसतपावनजौन ॥
तुलसीसोनीचेढरत, ताहिनिवारतकौन ॥८९ ॥

जोकरताहैकरमको, सोभोगतनहिंआन ॥
बवनहारलुनिहैसोई, देनीलहैनिदान ॥ ९० ॥

रावणरावणकोहन्यो, दोषरामकहँनाहिं ॥
निजहितअनहितदेखुकिन, तुलसीआपहिमाहिं ॥

सुमिरुरामभजुरामपद, देखुरामसुनुराम ॥
तुलसीसमुझैहुरामकहँ, अहनिशइहतवकाम ९२॥

रजअपअनलअनिलनभ, जड़जानतसबकोइ ॥
इहचैतन्यसदासमुझि, कारजरतदुखहोइ ॥ ९३ ॥
निजकृतबिलसतसोसदा, बिनपायेउपदेश ॥
गुरुपगुपायसुमयधरै, तुलसीहरैकलेश ॥ ९४ ॥
सलिलशुक्रशोणितसमुझु, पलअरुअस्थिसमेत॥
बालकुमारयुवाजरा, हैसुसमुझुकरचेत॥ ९५ ॥
ऐसिहिगतिअवसानकी, तुलसीजानतहेत ॥
तातेयहगतिजानिजिय अविरलहरिचितचेत९६।
जानैरामस्वरूपजब, तबपावैपदसन्त ॥
जन्ममरणपदतेरहित, सुखमाअमलअनन्त ९७॥
दुखदायकजानेभले, सुखदायकभजिराम ॥
अबहमकोसंसारको, सबविधिपूरणकाम॥९८॥
आपुहिमदकोपानकरि, आपुहिहोतअचेत ॥
तुलसीविविधिप्रकारको,दुखउतपतियहिहेत ९९
जासोकरतविरोधहठि, कहुतुलसीकोआन ॥
सोतैंशमननआनतव, नाहकहोसिमलान १००॥

चाहसिसुखजेहिमारिकै, सोतौमारिनजाय ॥
कौनलाभविषतेबदलि, तेतुलसीविषखाय १०१
कोहद्रोहअघमूलहै, जानतकोकहुनाहिं ॥
दयाधर्म्मकारणसमुझि, कोदुखपावततार्हि १०२
बनोबनायोरहैसदा, समुझरहितनहिंशूल ॥
अरुणवरणकेहिकामको, बासविनाकोफूल १०३॥

इतिश्रीमद्गोस्वामितुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकायामुपासनपराभक्तिनिर्देशोनामद्वितीयःसर्गः ॥ २ ॥

तृतीयः सर्गः ।

दोहा-जनकसुतादशयानसुत,उरगईशअमजोरि॥
तुलसिदासदशपदपरखि, भवसागरगयोपोरि १॥
तुलसीतेरोरोगखर, तातमातगुरुदेव ॥
तातजितोहींउचितअब, रुचितआनपदसेव ॥२॥
तर्कविशेषिनिषेधपति, उरमानसुसुपुनीत ॥
बसतमरालरहितकरि, तेहिमजुपलटिविनीत ३

शुक्रादिहिकलदेहुइक, अन्तसहितसुखधाम ॥
देकमलाकलअन्तको, मध्यसकलसुखदाम॥४॥
बीजधनंजयरविसहित, तुलसीतथामयंक ॥
प्रकटतहाँनहिंतमतमी,समचितरहतअशंक ॥५॥
रंजनकाननकोकनद, वंशविमलअवतंस ॥
गंजनपुरहुतआरिसदल, जगहितमानसहंस ॥६॥
जगतेरहुछत्तीसह्वै, रामचरणछत्तीन ॥
तुलसीदेखुविचारिहिय, हैयहमतोप्रवीन ॥ ७ ॥
कन्दिगदूबनक्षत्रहनि, गनीअनुजतेहिकीन्ह ॥
जेहिहरिकरमनिमानहनि, तुलसीतेहिपदलीन्ह८
शिलाआशुमोचकवरण, हरणसकलजंजाल ॥
भरणकरणसुखसिद्धितर, तुलसीपरमकृपाल ९॥
मरणविपतिहरधरधरम; धराधरणबलधाम ॥
शरणतासुतुलसीचहत, वरणअखिलअभिराम १०
बिहगबीचरैयतत्रितय, पतिपतितुलसीतोर ॥
तासुविमुखसुखंअतिविषम, सपनेहुहोतनभोर ११

द्वितियकोलराजिकप्रथम, बाहुननिश्चयसाहि ॥
आदिएककलदेभजहु, वेदविदितगुणनाहिं॥ १२॥
बसतजहाँराघवजलज, तेहिमितिगोजहिसंग ॥
भजुतुलसीतेहिअरिसुपद,करिउरप्रेमअसंग १३॥
भजहुतरणिआरिआदिकहँ,तुलसीआत्मजअन्त॥
पंचाननलहिपदसमथि, गहेविमलमनसन्त १४॥
बिनिताशैलसुतासकी, तासुजनमकोठाम ॥
तेहिभजुतुलसीदासहित,प्रणतसकलसुखधाम १५
भजुपतंगसुतआदिकहँ, मृत्युंजयअरिअन्तु ॥
तुलसीपुहुकरयज्ञकर, वरणपाँसुमिच्छन्तु ॥१६॥
उलटेतासीतासुपति, सोहजारमनसत्थ ॥
एकसूनरथतनयकहँ, भजसिनमनसमरत्थ १७॥
द्वितियतृतियहरकासनहिं,भजुतेहितुलसीदास ॥
काकासनआसनकियें, सासनलहेउपास ॥१८॥
आदिद्वितियअवतारकहँ, भजुतुलसीनृपअन्त ॥
कमलप्रथमअरुमध्यसह, वेदविदितमतसन्त १९

जेहिनगन्धोकछुमानसहु, सुरपतिअरिमोआस॥
तेहिपदशुचिताअवधिमव,तहिभजुतुलसीदास२०
नैनकरणगुणधरणवर, तावरवरणविचार ॥
चरणसतरतुलसीचहसि, उवरणशरणअधार२१॥
भजुहरिआदिहिघाटिका, भरितारजिवअन्त ॥
करितापदविश्वासभव, सरितातरसितुरन्त २२॥
जड़मोहनवरणादिकहँ, सहचञ्चलचितचेत ॥
भजुतुलसीसंसारअहि, नहिंगहिकरतअचेत २३
मरणअधिपवारणवरण, दूसरअन्तअगार ॥
तुलसीइष्टुसहरागधर, तारणतरणअधार ॥२४॥
ज्योंउरविजचाहसिझटित, तौकरिघटितउपाय॥
सुमनसवरवरअरिचरण, सेवनसरलसुभाय २५॥
द्वितियपयोधरपरमधन, बागअन्तयुतसोय ॥
भजुतुलसीसंसारहित, यातेअधिकनकोय २६॥
पतिपयोधिपावनपवन, तुलसीकरहुविचार ॥
आदिद्वितियअरुअन्तयुत,तामतंतवनिरधार २७

हंसकपटरससहितगुण, अन्तआदिप्रथमन्त ॥
भजुतुलसीतजिवामगति,जेहिपदरतभगवन्त२८॥
कनासमुझिकवरणहरहु, अन्तआदिपुततार ॥
श्रीकरतमहरवरणवर, तुलसीसरतउबार॥ २९ ॥
अंकदशारसआदिमुत, पाण्डुसूनुसहअन्त ॥
जानिमुवनसेवकसतर, करिहैकृपापरन्त ॥३०॥
झटितिसखाहिविचारिहिय, आदिवरणहरएक ॥
अन्तप्रथमस्वरदेभजहु, जाउरतत्त्वविवेक ॥३१॥
आदिचन्द्रचञ्चलसहित, भजुतुलसीतजुकाम ॥
अघगञ्जनरंजनसुजन, भवभञ्जनसुखधाम॥३२॥
विगतिदेहतनुजासुपति, पदरतिसहितसनेम ॥
यदिअतिमतिचाहसिसुगति,तदितुलसीकरुप्रेम ॥
करताशुचिसुरसरिसुता, शशिशारँगमहिजान ॥
आदिअन्तसहप्रथमयुत, तुलसीसमुझुनआन३४
गिरिजापतिकलआदिइक,हरिनक्षत्रबुधिजान ॥
आदिअन्तभजुअन्तपुनि, तुलसीशुचिमनमान॥

ऋतुपतिपदपुनिपदिकयुत, प्रथमआदिकरलेहु ॥
अन्तहरणपदद्वितियमहँ, मध्यवरणसहनेहु ॥३६॥
वाहनशेषसुमधुपरव, भरतनगरयुतजान ॥
हरिभरिसरितविपर्य्यकारि,आदिमध्यअवसान३७
तुलसीउडुगणकोवरण, वनजसहितदोउअन्त ॥
ताकहँभजुसंशयशमन, रहितएककलअन्त ३८॥
वारिजवारिजवरणवर, वरणततुलसीदास ॥
आदिआदिभजुआदिपद, पायेपरमप्रकास॥३९॥
भजुतुलसीकुलिशान्तकहँ, सहअगारतजिकाम॥
सुखसागरनागरललित, बलीअलीपरधाम॥४०॥
चंचलसहितरुचंचला, अन्तअन्तयुतज्ञान ॥
सन्तशास्त्रसम्मतसमुझि,तुलसीकरुपरमान॥४१॥
आदिवसन्तइकारदै, आशयतासुविचार ॥
तुलसीतासुशरणपरे, कासुनभयोउबार ॥ ४२ ॥
धराधराधरवरणयुग, शरणहरणभवभार॥
करनसतरतरपरमपद, तुलसीपरमाधार ॥ ४३ ॥

वरणधनंजयसूनुपति, चरणशरणरतिनाहि ॥
तुलसीजगवंचकविहठि, कियेविधातातााहि ४४
तुलसीरजनीपूर्णिमा, हारसहितलखिलेहु ॥
आदिअन्तयुतजानिकहि, तुलतरसनलसनेहु ४५
भानुगोत्रतिसितासुपति, कारणअतिहितजाहि ॥
ज्ञानसुगतियुतसुखसदन,तुलसीमानतताहि॥४६ ।
भजुतुलसीऔघादिकहुँ, सहिततत्त्वयुतअन्त ॥
भवआयुजयजासुबल, मनचलअचलकरन्त ४७
देतकहानृपकाजपर, लेतकहाइतराज ॥
अन्तआदियुतसहितभजु, जोचाहसिशुभकाज ४८
चन्द्रवर्णिभजुगुणसुहित, समुझिअन्तअनुराग ॥
तुलसीजोयहबनपरे, तौतवपूरणभाग ॥ ४९ ॥
जिनकेहरिबाहननहीं, दधिसुतसुतजेहिनाहिं ॥ ।
तुलसीतेनरतुच्छहैं, बिनासमीरउड़ाहिं ॥ ५० ॥
रविचंचलअरुअलद्रव, बीचसुवासुविचारि ॥
तुलसिदासआसनकरे, अवनिसुताउरधारि॥५१॥

बनबनिताहगकोपमा, युतकरुसहितविवेक ॥
अन्तआदितुलसीभजहु, परिहरिमनकरटेक॥८२
उर्वीअन्तहुआदियुत, कुलशोभीकमलाद ॥
कैविपर्य्यऐसेहिभजहु,तुलसीशमनविपाद॥८३॥
तौतोहिंकहँसबकोउसुखद, करहिकहातवपांच ॥
हरखतृतियवारिजवरण,तजबलीनसुनुसांच॥८४॥
तजहुसदाशुभआशअरि, भजुसुमनसअरिकाल॥
सजुमतईशअवन्तिका,तुलसीविमलविशाल ८५
सुतवंतवरवरणयुग, सेतजगतसज्ञान ॥
चेतसहितसुमिरणकरत, हरतसकलअघखान८६
मैत्रीवरणयकारको, सहसरआदिविचारि॥
पंचवर्गगहियुतसहित,तुलसीताहिसँभारि॥८७॥
हलयमसध्यसमानयुत, यातेअधिकनआन ॥
तुलसीताहिंविसारिशठ,भरमतफिरतभुलान८८॥
कौनजातिसीतासती, कोदुखदायकबाम ॥
कोकहियेशशिकरदुखद, सुखदायककोराम ८९

कोशङ्करगुरुनागवर, शिवहरकोअभिमान ॥
करताकोअजजगतको, भरताकोहरिजान ॥६०॥
सरत्रेयसराजीवगुण, करुतेहिदढपहिचान ॥
पंचपवर्गहियुतसहित, तुलसीताहिसमान ॥६१
होतहरषकापायधन,विपतितजेकाधाम॥
दुखदाकुमतिकुनारितर,अतिसुखदायकराम६२
वीरकवनसहमदनशर, धीरकवनरतराम ॥
कवनकूरहरिपदविमुख, कोकासीवशवास॥६३॥
कारणकोकंजीवको, खंगुणकहैसबकोय ॥
जानतकोतुलसीकहत, सोपुनिआवनहोय॥६४॥
तुलसीवरणविकल्पको औचपत्रितियसमेत ॥
अबसमुझेजडसरितनर, समुझैसाधुसचेत ॥६५॥
जासुआशुसरदेवको, अरुआसनहरुवाम ॥
सकलदुखदतुलसीतजहु, मध्यतासुसुखधाम६६॥
चंचलतियमजुप्रथमहरि, जोचाहसिपरधाम ॥
तुलसीकहहिसुजनसुनहु, यहीसयानपकाम६७॥

कुलिशधर्मसंयुतयुगअना, भजुतुलसीतजुकाम ॥
अघ्नुसहरणसंशयशमन,सकलकलागुणधाम६८॥
श्रीकरकोरघुना[illegible] अनयशकहसबकोय ॥
सुखदाकोजानतकुमति, तुलसी[illegible]होय॥६९॥
वैरमूलहितहरवचन, प्रेममूलउपकार ॥
दोहासरलसनेहमें, तुलसीकरैविचार ॥ ७० ॥
आगकवनगुरुलघुजगत, तुलसीअवरनआन ॥
श्रेष्ठाकोहरिभक्तिसम, कोलघुलोभसमान ॥७१॥
वरणद्वितियनाशकनिरय, तुलसीअन्तरसार ॥
भजहुसकलश्रीकरसदन, जनपालकखलसार७२॥
चपश्रेयससस्वरतहित; यमयुतदुखदनआन ॥
तुलसीहलयुततेकुशल, अन्तिकारसहजान॥७३॥
तुलसीयमगणबोधबिन, कहुकिमिमिटैकलेश ॥
तातेसद्गुरुशरणगहु, जातेपदउपदेश ॥ ७४ ॥
भगणजगणकासोंकरसि, रामअयनतनहिंकोय ॥
तुलसीपतिपहिचानविन, कोउतुलकबहुँनहोय७५

तुलसीतगणविहीननर, सदानगणकेबीच ॥
तिनहिंजगणकेसेलहै, परेसगणकेकीच ॥ ७६ ॥
इन्दरमणिसुरदेवऋषि, रुक्मिणिपतिसुमनान ॥
भोजनदुहिताकाकअलि. गाणँदअशुभसमान७७
कोहितस[illegible]अहितकुटिल, नाशककोहितलोभ ॥
पोषकतोषकदुखदअरि, शोषकतुलसीक्षोभ॥७८॥
सदानगुणपदप्रीतिजेहि, जासुनगणसमताहि ॥
जगणताहिजययुतरहत, तुलसीसंशयनाहि॥७९॥
भगणभक्तिकरुभरमतजि, तगणसगणविधिहोय॥
सगणसुभायसमुझितजो, भजेनदूषणकोय॥८०॥
श्रीगजआसनजूतजू, विहरततीरसुधीर ॥
यज्ञपायमैत्राणपद, राजतश्रीरघुवीर ॥ ८१ ॥
बाणयूतजूतटनिकट, विहरतरामसुजान ॥
तुलसीकरकमलनललित, लसतशरासनबान८२
मृदुमेचकशिररुहरुचिर, शीशतिलकभ्रूबंक ॥
धनुशरगहिजनुतहितयुत, तुलसीलसतमयंक८३॥

हंसकमलविचवरणयुत, तुलसीअतिप्रियजाहि ॥
तीनलोकमहँजोभजे, लहैतासुफलताहि ॥ ८४ ॥
आदिमहैअन्तहुमहै, मध्यरहैतेहिजान ॥
अनजानेजड़जीवसव,समुझैसन्तसुजान ॥८५॥
आदिदहैमध्येरहै, अन्तदहैसोबात ॥
रामविमुखकेहोतहै, रामभजेतेजात ॥ ८६ ॥
ललितचरणकटिकरललित, लसतललितबनमाल
ललितचिबुकद्विजअधरसह,लोचनललितविशाल
मरणहरणअक्षयअमल ,सहितविकल्पविचार ॥
कहतुलसीमतिअनुहरत, दोहाअर्थअपार ॥८८॥
वशिष्ठादिलंकारमहँ, संकेतादिकुरीति ॥
कहेबहुरिआगेकहब, समुझबसुमतिविनीति८९॥
कोपअलंकृतसंधिगति,मैत्रीहरणविचार ॥
हरणमरणसुविभक्तिभल, कविहिअर्थनिरधार९०
देशकालकरताकरम, बुधिविद्यागतिहीन ॥
तेसुरतरुतरदारदी, सुरसरितीरमलीन ॥ ९१ ॥

देशकालगतिहीनजे, करताकरमनज्ञान ॥
तेपिसमर्थमगुपगुधरहिं, तुलसीश्वानसमान ॥९२॥
अधिकारीसबबौसरी, भलोजानिबोमन्द ॥
सुधासदनबसुबारहों, चौथीअथवाचन्द॥ ९३ ॥
नरवरनभसरवरसलिल, बिनयवनजविज्ञान ॥
सुमतिशुक्तिकाशारदा, स्वातीकहहिंसुजान ९४॥
शमदमसमतादीनता, दानदयादिकरीति ॥
दोषदुरितहरदरदहर, रवरविविमलविनीति॥९५॥
धरमधुरीणसुधीरधर; धारनवरपरपीर ॥
धराधराधरसमअचल, वचननविचलसुधीर९६॥
चौंतिसकेप्रस्तारमें, अर्थभेदपरमान ॥
कहहुसुजनतुलसीकहहिं, याविधितेपहिचान९७॥
वेदविषमकवरणसतर, सुतररामकीरीति ॥
तुलसीभरतनभरिहरत,भूलिहरहुजनिप्रीति॥९८॥
बनतेगुणकहँजानिये, तातेहगादिगतीन ॥
तुलसीयहजियसमुझिकरि,जगजितसत्तप्रवीन९९

चन्द्रअनलनहिहैकहूँ, झूठोबिनाविवेक॥
तुलसीतेनरसमुझिहैं,जिनहिज्ञानरसएक॥ १००॥
सतसैयातुलसीसतर, तमहरपरपरदेत ॥
तुरितअविद्याजनदुरित,वरतुलसमकरिलेत १०१
इति श्रीमद्गोसांईंतुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकायांसं-
केतवक्रोक्तिरामरसवर्णनोनामतृतीयःसर्गः ॥ ३ ॥

चतुर्थः सर्गः ।

दो०–त्रिविधभीतिकोशब्दवर, विघटनलटपरसान
कारणअविरलअलपियत, तुलसीअविधभुलान १
दिगभ्रमजाविधहोतहै, कौनभुलावतताहि ॥
जानिपरतगुरुज्ञानते, सबजगसंशयमाहि ॥ २ ॥
कारणचारिविचारुवर, वरणन अपरनआन॥
सदासोउगुणदोषमें, लखिनपरतबिनज्ञान ॥ ३ ॥
इहकरतबसघताहिको, यहितेयहपरमान ॥
तुलसीमरसनपाइहौ, विनसद्गुरुवरदान ॥ ४ ॥

दिगभ्रमकारणचारते, जानहिंसन्तसुजान ॥
ते कैसेलखिपाइहैं जेबहिविषयसुलान ॥ ५ ॥
सुखदुखकारणसोभयो, रसनाकोसुतवीर ॥
तुलसीसोतबलखिपरै, करैकृपावरधीर ॥ ६ ॥
अपनेखोदेकूपमहँ, गिरेयथादुखहोइ ॥
तुलसीसुखदसमुझिहिये,रचतजगतसबकोइ॥७॥
ताविधितेअपनोविभव, दुखसुखदेकरतार ॥
तुलसीकोउकोउसन्तवर,कीन्हेविरचिविचार॥८॥
रसनाहीकेसुतउपर, करतकरनतरप्रीति ॥
तेहिपाछेजगसबलगे, समुझनरीतिअरीति ॥९॥
मायामनजिवईशमणि, ब्रह्माविष्णुमहेश ॥
सुरदेवीओमललौं, रसनासुतउपदेश ॥ १० ॥
करणधारवारिधिअगम, कोगमकरैअपार ॥
जनतुलसीसतसंगबल, पायेविशदविचार॥११॥
गहिसुबलविरलेसमुझि, बहिगेअपरहजार ॥
कोटिनबूडेखबरिनहिं,तुलसीकहहिंविचार॥१२॥

अबनसुनतदेखतनयन, तुलतनविविधविरोध ॥
कहहुकहीकेहिमानिये,केहिविधिकरियप्रबोध १३
श्रवणात्मकध्वन्यात्मक, वरणात्मकविधितीन ॥
त्रिविधशब्दअनुभवअगम, तुलसीकहहिंप्रवीन ॥
कहतसुनतआदिहिवरण, देखत वरणविहीन ॥
दृष्टिमानचरअचरगण, एकहिएकनलीन ॥ १५॥
पंचभेदचरगणविपुल, तुलसीकहहिंविचारि ॥
नरपशुस्वेदजखगकृमी, बुधजनमतनिरधारि १६
अतिविरोधतिनमहँप्रबल, प्रकटपरतपहिचान ॥
अस्थावरगतिअपरनहिं, तुलसीकहहिंप्रमान १७
रोमरोमब्रह्माण्डबहु, देखततुलसीदास ॥
बिनदेखेकैसेकोउ, सुनिमानै विश्वास ॥ १८ ॥
वेदकहतजहँलगिजगत, तेहितेअलगनआन ॥
तेहिअधारव्यवहरतलखु,तुलसीपरमप्रमान १९॥
सरषपसूझतजासुकहँ,ताहिसुमेरुअसूझ ॥
कहेउनसमुझतसोअबुध,तुलसीविगतबिसूझ२०॥

कहतअवरसमुझतअवर, गहततजतकछु और ॥
कहेउसुनैसमुझतनहीं, तुलसीअतिमतिबौर२१ ॥
देखोकरैअदेखइव, अनदेखोविश्वास ॥
कठिनप्रबलतामोहकी, जलकहँपरमपियास२२॥
सोईसेमरसोइसुवा, सेवतपाइबसन्त ॥
तुलसीमहिमामोहकी, विदितबखानतसन्त २३॥
सुन्योसबनदेख्योनयन, संशयशमनसमान ॥
तुलसीसमताअसमभव, कहतआनकहआन२४॥
त्रसहाभवअरिहितअहित, सोपिनसमुझतहीन ॥
तुलसीदीनमलीनमति, मानतपरमप्रबीन॥२५॥
भटकतपदअद्वैतता, अटकतज्ञानगुमान ॥
सटकतवितरनतेविहटि,फटकततिसुअभिमान२६
जोचाहततेहिविनुदुखित,सुखितरहिततेहिहोइ ॥
तुलसीसोअतिशयअगम, सुगमरामतेसोइ॥२७॥
मातपितानिजबालकहि, करहिंइष्टउपदेश ॥
सुनिमानेविधिआपजेहि, निजशिरसहेकलेश२८

सबसोंभलोमनाइबो, भलोहोनकीआस ॥
करतगगनकेगेंडुआ, सोशठतुलसीदास ॥२९॥
विलिसिहुदेखतदेवता, करणीसमतादेव ॥
सुयेमारअविचाररत, स्वारथसाधकएव ॥ ३० ॥
बिनहिंबीजतरुएकभव ,शाखादलफलफूल ॥
कोवरणैअतिशयअमित,सबविधिअकलअतूल३१
शुकपिकमुनिगणबुधविबुध,फलआश्रितअतिदीन
तुलसी तेसबबिरदहित,सोतरुतासुअधीन॥३२॥
कोनहिंसेवतआयभव, कोनसेयपछताय ॥
तुलसीवादहिपचतहै, आपहिआपनशाय॥३३॥
कहतविविधफलविमलतेहि, बहतनएकप्रमान ॥
भरमप्रतिष्ठामानिमन, तुलसीकथतभुलान३४ ॥
मृगजलघटभरिविविधविधि,सींचतनभतरुमूल
तुलसीमनहरषितरहत,बिनहिंलहेफलफूल॥३५॥
सोपिकहहिंहमकहँलह्यो, नभतरुकोफलफूल ॥
तेतुलसीतिननतेविमल,मुनिमानहिंमुदमूल॥३६॥

तेपितिन्हैंयाचहिंविनय, करिकरिबारहजार ॥
तुलसीगाडरकीढरन, जानेजगतविचार ॥ ३७ ॥
शशिकरसँगरचनाकिये,कतशोभासरसात ॥
स्वर्गसुमनअबसन्तखलु,चाहतअचरजबात॥३८
तुलसीबोलनबूझई,देखतदेखनजोय ॥
तिनशठकेउपदेशका,करबसयानेकोय ॥ ३९ ॥
जोनसुनैतेहिकाकहिय,कहासुनाइयताहि ॥
तुलसीतेहिउपदेशही,तासुसरिसमतिजाहि॥४०॥
कहतसकलघटराममय;तौखोजतकेहिकाज ॥
तुलसीकहइहकुमतिसुनि,उरआवतअतिलाज४१
अलखकहहिंदेखनचहहिं, ऐसेपरमप्रबीन ॥
तुलसीजगउपदेशही,बनिबुधअबुधमलीन॥४२॥
हहरतहारतरहितविद,गहतधरेअभिमान ॥
तेतुलसीगुरुआवनहिं,कहिइतिहासपुरान ॥४३॥
निजनैननदीसतनही,गहीआंधरेबांह ॥
कहतमोहवशतेहिअधम,परमहमारेनाह ॥ ४४ ॥

गगनवाटिकासींचहीं,भरिभरिसिन्धुतरङ्ग ॥
तुलसीमानहिंमोदमन,ऐसेअधमअमङ्ग ॥ ४५ ॥
दृषदकरतरचनाबिहरि,रङ्गरूपसमतूल ॥
विहगवदनविष्टाकरे,तातेभयोनतूल ॥ ४६ ॥
चाहतिहारोआपते,मान्नआननआन ॥
तुलसीकरुपहिचानपति,यातेअधिकनआन॥४७
आतमबोधविचारइह,तुलसीकरुउपकार ॥
कोउकोउरामप्रसादते,पावतपरमतपार ॥ ४८ ॥
जहाँतोषतहँरामहैं,रामतोषनहिंभेद ॥
तुलसीदेखिगहतनहीं,सहतविविधविधिखेद४९॥
गोधनगजधनवाजिधन, औररतनधनखान॥
जबआवैसन्तोषधन,सबधनधूरिसमान ॥ ५०॥
कुथिरतिअटतविमूढ़लटें, घटउदघटतनखान ॥
तुलसीरटतहटतेनहीं,अतिशयगतिअभिमान ५१
भूभुवतुगतदामभुव; कामनविविधविधान ॥
तोतनवर्त्ततमानयत,ततत्तुलसीपरमान ॥ ५२ ॥

ओउरसुक्तिविभवपढिक, मनगतप्रकटलखात ॥
मनओउरअपिसुक्तिते, विलगविजानबतात॥५३॥
रामचरणपहिचानबिनु, मिटीनमनकीदौर ॥
जन्मगँवायेबादही, रटतपरायेपौर ॥ ५४ ॥
सुनैवरणमानैवरण, वरणविलगनहिंज्ञान ॥
तुलसीसुगुरुप्रसादबल, परैवरणपहिंचान ॥५५॥
विटपवेलिगणबागके,मालाकारनजान ॥
तुलसीताविधिविदविना,करतारामभुलान ५६॥
करतुबहीसोंकर्महै,कहतुलसीपरमान ॥
करणहारकरतारसो, भोगैकर्मनिदान ॥५७॥
तुलसीलटपदतेनटक, अटकअपितनहिंज्ञान ॥
तातेगुरुउपदेशबिनु,भरमतफिरतभुलान ॥५८ ॥
ज्योंबरदाबतिजारके,फिरतघनेरेदेश ॥
खांडभरेभुसखातहैं, बिनगुरुकेउपदेश ॥ ५९ ॥
बुध्वावैरनअयनपद, श्वपिलपदारथलीन ॥
तुलसीतेहिरासभसरिस, निजमनगणहिंप्रवीन६०

कहतविविधदेखेविना,गहतअनेकनएक ॥
तेतुलसीसोनहिंसरिस,वाणीवदहिंअनेक ॥ ६१॥
विनुपायेपरतीतअति, करतयथारथहेत ॥
तुलसीअवुधअकाशइव,भरिभरितुठीलेत॥६२॥
वसनवारिवांधतविहठि, तुलसीकौनविचार ॥
हानिलाभविधिबाँधबिन,होतनहींनिरधार ६३॥
कामक्रोधमदलोभकी,जबलगमनमेंखान ॥
कापण्डितकामूरख,दोनोंएकसमान ॥ ६४॥
इतकुलकीकरणीतजे,उतनभजेभगवान ॥
तुलसीअधवरकेभय,ज्योंवधूरकोपान ॥ ६५ ॥
कीरसरिसवाणीपढ़त,चाखनचाहतखांड़॥
मनराखतवैरागमहँ,घरमोंराखतरांड ॥ ६६॥
रामचरणपरचैनहीं,बिनसाधनपदनेह ॥
मूड़मुड़ायेवादहीं,भांड़भयेतजिगेह ॥ ६७ ॥
काहभयोबनबनफिरे,जोबनिआयोनाहिं ॥
बनतेबनतेबनिगयो, तुलसीघरहीमाहिं ॥ ६८॥

जोगतिजानैंवरणकी,तनुगतिसोअनुमान ॥
वरणविन्दुकारणयथा,तथाजानुनहिंआन॥६९॥
परणयोगभवनामजग, जानुभरमकोमूल ॥
तुलसीकरताहैतुही,जानुमानुजनिभूल ॥ ७० ॥
नामजगतसमसमुझजग, वस्तुनकरिचितवैन ॥
बिन्दुगयेजिमिगैनते, रहतऐनकोऐन ॥ ७१ ॥
आपुहिऐनविचारुविधि,सिद्धिविमलगतिमान॥
आनवासनाबिन्दुसम, तुलसीपरमप्रमान॥७२॥
धनधनकहेनहोतकोउ, समुझिदेखुधनमान॥
होतधनिकतुलसीकहत,दुखितनरहतजहान ॥७३
हिमकीमूरतिकेहिये, लगीनीरकीप्यास ॥
लगतशब्दगुरुतरनिकर, सोमैंरहीनआस ॥७४ ॥
जाकेउरवरवासना, भईभाषकछुआन ॥
तुलसीताहिविडम्बना,कहिविधिकथहिप्रमान७५
रुजतनुभवपरचैविना; भेषजकरिकिमिकोय ॥
जानपरैभेषजकरै, सहजनाशरुजहोय ॥ ७६ ॥

मानसरव्याधकुचाहतन, सद्गुरुवैदसमान ॥
जासुवचनअलबलअवश, होतसकलरुजहान ७७
रुचिबाढ़ैसतसंगमहँ, नीतिक्षुधाअधिकाय ॥
होतज्ञानबलपीनअल,वृजिनविपतिमिटिजाय ७८
शुक्लपक्षशशिस्वच्छभो, कृष्णपक्षद्युतिहीन ॥
बढ़बघटनविधिभांतिविचि,तुलसीकहहिंप्रवीन ७९
सतसंगतिसितपक्षसम, असितअसन्तप्रसंग ॥
जासुआपकहँचन्द्रसम, तुलसीवदनअभंग ८० ॥
तीरथपतिसतसंगसम, भक्तिदेवसरिजान ॥
विधिउलटीगतिरामकी, तरणिसुताअनुमान ८१ ॥
वरमेधामानहुगिरा, धीरधर्म्मन्यग्रोध ॥
मिलनत्रिवेणीमनहरणि, तुलसीतजहुविरोध ८२
समझबसबमज्जनविशद, मलअनीतगइधोय ॥
अवशमिलनसंशयनहीं, सहजरामपदहोय ८३ ॥
क्षेमविमलवाराणसी, सुरअपगासमभक्ति ॥
ज्ञानविश्वेश्वरअतिविशद,लसतदयासहशक्ति ८४

वसतक्षेमगृहजासुमन, वाराणसीनदूरि ॥
विलसतिसुरसरिभक्तिजहँ,तुलसीनयकृतभूरि ८५
सितकाशीमगहरअसित, लोभमोहमदकाम ॥
हालिलासतुलसीसमुझि, वासकरहुवसुयाम ८६॥
गयेपलटिआवेनहीं, हैसोकरूपहिचान ॥
आजुजेइसोकालहै, तुलसीभरमनमान ॥८७ ॥
वर्त्तमानआधीनदोउ, भावीभूतविचार ॥
तुलसीसंशयमननकरु, जोहैसोनिरुआर॥८८ ॥
मानसउरवरममधुर, रामसुयशशुचिनीर ॥
उठेउवृजिनबुधिविमलभइ,बुधिनहिंअगमअधीर८९
अलंकारकविरीतियुत, भूषणदूषणरीति ॥
वारिजातबरणतविविध,तुलसीविमलविनीति ९०
बिनैविचारसुहिहता, सोपरागरसगन्ध॥
कामादिकतेहिसरलसत, तुलसीघाटप्रबन्ध ९१॥
प्रेमउमँगकवितावली, चलीसरितशुचिधार ॥
रामबरामरिमिलनहित,तुलसीहरषअपार॥९२ ॥

तरलतरंगसुछन्दवर, हरतद्वैततरुमूल ॥
वैदिकलौकिकविधिविमल, लसतविशदवरकूल
सन्तसभाविमलानगरि, सिगरिसुमंगलखानि॥
तुलसीउरसुरसरिसुता, लसतसुथलअनुमानि९४
मुक्तमुमुक्षूवरविषद, श्रोतात्रिविधप्रकार ॥
ग्रामनगरपुरयुगसुतट,तुलसीकहहिंविचार॥९५॥
वाराणसीविरागनहिं, शैलसुतामनहोय॥
तिमिअवधहिसरयुनतजै,कहतसुकविसबकोय९६
कहबसुनबसमुझबपुनः,सुनिसमुझायबआन ॥
श्रमहरघाटप्रबन्धवर तुलसीपरमप्रमान ॥९७॥
इति श्रीमद्गोसाईस्वामीतुलसीदासविरचितायांसप्तशति-
कायांआत्मबोधनिर्देशोनामचतुर्थःसर्गः ॥ ४ ॥

पञ्चमःसर्गः ।

दो०-यतनअनूपमजासुवर, सकलकलागुणधाम
अविनाशीअव्ययहअमल,भोयहतनुधरिराम॥१॥

सदाप्रकाशसरूपवर, अस्तनअपरनआन ॥२॥
अप्रमेयअद्वैतअज, यातेदुरतनज्ञान ॥
जानहिंहंसारससमकहँ, तुलसीसन्तनआन ॥
जाकीकृपाकटाक्षते, पायेपदनिर्वान ॥ ३ ॥
तजतसलिलअपिपुनिगहत, घटतबढ़तनहिंरीति ॥
तुलसीयहगतिउरनिरखि, करियरामपदप्रीति ४
चुम्बकइरहनसेतिजिमि, संतन्हहरिसुखधाम ॥
जानतिरीक्षरससमसफरि, तुलसीजानतराम॥ ५॥
भरतहरतदरशातसबहिं, पुनिअदरशसबकाहु ॥
तुलसीसुगुरुप्रसादवर, होतपरमपदलाहु ॥ ६ ॥
यथाप्रत्यक्षसरूपबहु, जानतहैसबकोय ॥
तथाहिलैगतिकोलखब, असमंजसअतिसोय ७
यथासकलअपिजातअप, रविमंडलकेमाहिं ॥
मिलततथाजिवरामपद, होततहाँलैनाहिं ॥ ८ ॥
कर्मकोषसँगलैगयो, तुलसीअपनीबानि॥
जहाँजायविलसैतहाँ, परैकहाँपहिचानि ॥ ९ ॥

ज्योंधरणीमहँरहेतुसब, रहतयथाधरिदेह ॥
त्योंतुलसीलैराममहँ, मिलतकबहुनहिंएह॥१०॥
शोषकपोषकसमुझशुचि, रामप्रकाशसरूप ॥
यथातथाबिनुदेखिये, जिमिआदरशअनूप ११॥
कर्ममिटायेमिटतनहिं, तुलसीकियेविचार॥
करतबहीकेफेरहै, याविधिसारअसार ॥ १२ ॥
एककियेहोदूसरो, बहुरितीसरोअंग ॥
तुलसीकैसेहुनानशै,अतिशयकर्मतरंग ॥ १३ ॥
इनदोउनतेरहतभो, कोउनरामतजिआन ॥
तुलसीयहगतिजानिहै,कोउकोउसंतसुजान १४
सन्तनकोलैअमिसदन, समुझहिसुगतिप्रवीन ॥
कर्मविपर्ययकबहुँनहिं, सदारामरसलीन ॥१५॥
सदाएकरससन्तसिय, निश्चयनिशिकरजान ॥
रामदिवाकरदुखहरण, तुलसीशीलनिधान१६ ॥
सन्तनकीगतिउरत्रिजा,जानहुशशिपरमान ॥
रमितरहतरसमेंसदा, तुलसीरतिनहिंआन ॥

जातरूपजिमिअनलमिलि; ललितहोततनंताय॥
सन्तशीलकरसीयतिमि, लसहिरामपदपाय १८॥
आपुहिबांधतआपुहठि, कौनछुड़ावतताहि॥
सुखदायकदेखतसुनत,तदपिसोमानतनाहि १९॥
जौनतारतेअधमगति, ऊर्द्धतौनगतिजात ॥
तुलसीमकरीतन्तुइव, कर्मनकबहुंनशात ॥२० ॥
जहाँरहततहँसहसदा, तुलसीतेरीबानि ॥
सुधरैविधिवशहोयजब,सतसंगतिपहिचानि२१॥
रविरजनीसघरातथा, इहअस्थिरअसथूल ॥
सूक्षमगुणकोजीवकर, तुलसीसोतनमूल ॥२२ ॥
आवतअपरवितेयथा, जाततथारविमाहिं ॥
जहँतेप्रकटततहँदुरत, तुलसीजानतताहि ॥२३॥
प्रकटभयेदेखतसकल ,दुरतलखतकोइकोय॥
तुलसीयहअतिशयअगम, बिनगुरुसुगमनहोय॥
याजगजेनयहीननर, बरबसदुखमगजाहि ॥
प्रकटतदुरतमहादुखी, कहँलगिकहियतताहि २५

सुखदुखमगअपनेगहे, मगकेहुगहतनधाय ॥
तुलसीरामप्रसादविनु, सोकिमिजानोजाय२६ ॥
महितेरविरवितेअवनि, सपनेहुँदुखकहुँनाहिं ॥
तुलसीतबलगिदुखितअति, शशिमगुलहतनताहि
सन्तनकोगतिशीतकर, लेशकलेशनहोय ॥
सोसियपदसुखदासदा, जासुपरमपदसोय॥ २८॥
तजतअमियशशिजानिजग, तुलसीदेखतरूप ॥
गहतनहींसबकहँविदित, अतिशयअमलअनूप२९
शशिकरसुखदसकलजगत, कोतेहिजानतनाहिं॥
कोककमलकरदुखदकर, तदपिदुखदनहिताहि३०
बिनदेखेसमुझेसुने, सोभौमिथ्यावाद ॥
तुलसीगुरुगमकैलखै; सहजैमिटैविषाद ॥ ३१ ॥
वरषिविश्वहर्षितकरत, हरततापअघप्यास ॥
तुलसीदोषनजलदकर, त्योंजड़करतजवास॥३२॥
चन्द्रदेतअमिलेतविष, देखहुमनहिंविचार ॥
तुलसीतिमिसियसन्तवर, महिमाविशदअपार३३

रसमविदितरविरूपलखु, शीतशीतकरजान ॥
लसतयोगयशकारभव, तुलसीसमझसमान॥ ३४॥
लेतिअवनिरविअंशकहँ, देतिअमियअपसार ॥
तुलसीसूक्षमकोसदा, रविरजनीशअधार॥ ३५ ॥
भूमिभानुअस्थूलअप, सकलचराचररूप ॥
तुलसीबिनगुरुनालहै, यहमतअमलअनूप ॥ ३६॥
तुलसीजेलयलीननर, तेनिशिकरतनलीन ॥
अपरसकलरविगतभये, महाकष्टअतिदीन॥ ३७॥
तुलसीकवनेहुँयोगते, सतसंगतिजबहोय ॥
राममिलनसंशयनहीं, कहहिंसुमतिसबकोय ३८॥
सेवकपदसुखकरसदा, दुखदसव्यपदजान ॥
यथाबिभीषणरावणहि, तुलसीसमुझप्रमान॥ ३९॥
शीतउष्णकररूपयुग, निशिदिनकरकरतार ॥
तुलसीतिनकहँएकनहिं, निरखहुकरिनिरधार४०
नहिंनैननकाहूलख्यो, धरतनामसबकोय ॥
तातेसांचोहैसमुझि, झूँठकबहुँनहिंहोय॥ ४१ ॥

वेदकहतसबकोउबिदित, तुलसीअमियस्वभाव॥
करतपामअपिरुजहरत, अविरलअमलप्रभाव ४२
गन्धशीतअपिउष्णता, सबहिविहितजगजान॥
महिवनअनलसुआनिलग; बिनदेखेपरमान ४३॥
इनमहँचेतनअमलअल, बिलखततुलसीदास॥
सोपदगुरुउपदेशसुनि, सहजहोतपरकास॥४४॥
यहिविधितेबरबोधइह; गुरुप्रसादकोउपाव॥
हैतेअलतिहुँकालसहँ; तुलसीसहजप्रभाव॥४५॥
काकसुतासुतवासुता, मिलतजननिपितुधाय॥
आदिमध्यअवसानगत, चेतनसहजसुभाय ४६॥
समतास्वारथहीनते, होतसुविशदविवेक॥
तुलसीयहतिनहींफबै, जिनहिंअनेकनएक ४७॥
सबस्वारथस्वारथरटत, तुलसीघटतनएक॥
ज्ञानरहितअज्ञानरत, कठिनकुमनकरटेक ४८॥
स्वारथसोजानहुसदा, जासोंविपतिनशाय॥
तुलसीगुरुउपदेशविन, सोकिमिजानोंजाय ४९॥

कारजस्वारथहितकरै, कारणकरैनहोय ॥
मनवाऊषविशेषते, तुलसीसमुझहुसोय ॥५०॥
कारणकारजजानता, सबकाहूपरमान ॥
तुलसी कारजकारजो, सोतैंअपरनआन ॥५१॥
बिनकरताकारजनहीं, जानतहैंसबकोय ॥
अरुसुखश्रवणसुनतनहीं,भ्रातिकवनविधिहोय५२
करताकारणकारजहु, तुलसीगुरुपरमान ॥
लोपतकरतामोहवश, ऐसोअबुधमलान ॥५३ ॥
अनिलसलिलविधियोगते, यथाबीचिबहुहोय॥
करतकरावतनहिंकछुक, करताकारणसोय ५४॥
क्षेमधरणकरतारकर, तुलसीपतिपरधाम ॥
सोवरतरतासमनकोउ, सबविधिपूरणकाम ५५॥
करताकारणसारपद, आवैअमलअभेद ॥
कर्म्मघटतअपिबढ़तहैं, तुलसीजानतवेद ॥ ५६॥
स्वेदजजवनप्रकारते, आपुकरैकोउनाहिं ॥
भयेप्रकटतेहिकेसुनो, कौनविलोकतताहिं॥५७॥

भयोविषमताकर्ममहँ, समताकियेनहोय ॥
तुलसीसमतासमुझकर, सकलमानमदधोय ८८॥
समहितसहितसमस्तजग, सुहृदजानसबकाहु ॥
तुलसीयहमतधारुउर, दिनप्रतिअतिसुखलाहु८९
यहमनमहँनिश्चयधरहु, है कोउअपरनआन ॥
कासनकरतविरोधहठि, तुलसीसमुझप्रमान ६०॥
महिजलअनलसुअनिलनभ, तहाँप्रकटेतवरूप ॥
जानिजायवरबोधते, अतिशुभअमलअनूप ६१॥
जोपैआकसमानते, उपजेबुद्धिविशाल ॥
नातोअतिछलहीनह्वै, गुरुसेवनकछुकाल ॥६२॥
कारजयुगजानहुहिये, नित्यअनित्यसमान ॥
गुरुगमतेदेखहिसुजन, कहतुलसीपरमान ॥६३॥
महिमयंकअहिनाथको, आदिज्ञानभोभेद ॥
तविधितेईजीवकहँ, होतसमुझबिनखेद ॥ ६४ ॥
परोफेरनिजकर्ममहँ, भ्रमभवकायहहेत ॥
तुलसीकहतसुजनसुनहु, चेतनसमुझअचेत६५॥

नामकारदूषणनहीं, तुलसीकियेविचार ॥
कर्मनकीघटनासमुझि, ऐसेवरणउचार ॥ ६६ ॥
सुजनकुजनमहिगतयथा, तथाभानुशशिमाहिं ॥
तुलसीजानतहोसुखी, होतसमुझबिननाहिं ६७॥
मातुतातभवरीतिजिमि, तिमितुलसीगतितोरि ॥
मातनतातनजानुतब, हैतेहिसमुझबहोरि ॥६८॥
सर्वसकलतेंहैसदा, विश्लेषितसबठौर ॥
तुलसीजानहिसुहृदजे, तेअतिमतिशिरमौर ६९॥
अलंकारघटनाकुनक, रूपनामगुणतीन ॥
तुलसीरामप्रसादते, परखहिपरमप्रवीन ७० ॥
एकपदारथविविधगुण, संज्ञाअगमअपार ॥
तुलसीसुगुरुप्रसादते, पायेपदनिरधार ॥७१॥
गन्धनमूलउपाधिबहु, भूषणतनगणजान ॥
शोभागुणतुलसीकहहिं,समुझहिंसुमतिनिधान७२
जैसोजहाँउपाधितहँ, घटितपदारथरूप ॥
तैसोतहाँप्रभासमन, गुणगणसुमतिअनूप ॥७३ ॥

जासुवस्तुअस्थिरसदा, मिटतमिटायेनाहिं॥
रूपनामप्रकटतदुरत, समुझिविलोकहुताहिं७४॥
पेपरूपसंज्ञाकहब, गुणमुविवेकविचार॥
इतनोईउपदेशवर, तुलसीकियेविचार॥ ७५॥
सदासगुणसीतारमण, सुखसागरबलधाम॥
जनतुलसीपरखेपरम, पायेपदविश्राम॥ ७६॥
सगुणपदारथएकनित, निर्गुणअमितउपाधि॥
तुलसीकहहिंविशेषते, समुझसुगतिसुठिसाधि७७
यथाएकमहँवेदगुण, तामहँकोकहुनाहिं॥
तुलसीवर्णतसकलहैं, समुझतकोउकोउनाहिं ७८
तुलसीजानतसाधुजन, उदयअस्तगतभेद॥
बिनजानेकैसेमिटै, विविधजननजनखेद॥७९॥
संशयसोकसमूलरुज, देतअमितदुखताहि॥
अहिअनुगतसपनेविविध, चाहिपरायणजाहि८०
तुलसीसाँचोशापहै, जबलगिखुलैननैन॥
सोतबलगिजबलागिनहीं, सुनैसुगुरुबरबैन॥८१॥

पूरणपरमारथदरश, परसतजौलगिआश ॥
तौलगिखनउत्थाननद, जबलगिजलनप्रकाश ८२
तबलगिहमतेसबबड़ो, जबलगिहैकछुचाह ॥
चाहरहितकहक्कोअधिक, पायपरमपदथाह ८३॥
कारणकरताहैअचल, अपिअनादिअजरूप ॥
तातेकारजविपुलतर, तुलसीअमलअनूप॥८४॥
करताजानिनपरतहै, विनगुरुवरपरसाद ॥
तुलसीनिजसुखविधिरहित, केहिविधिमिटेविषाद
मृन्मयघटजानतजगत, बिनकुलालनहिंहोय ॥
तिमितुलसीकरतारहित,कर्मकरैकहुंकोय॥८६॥
तातेकरताज्ञानकर,जातेकर्मप्रधान ॥
तुलसीनालखिपाइहो,कियेअमितअनुमान ८७॥
अनूमानसाक्षीरहित, होतनहींपरमान ॥
कहतुलसीप्रत्यक्षजो, सोकहुअपरकोआन ८८॥
मितिकारणकरतासहित, कारजकियेअनेक ॥
जोकरताजानेनहीं, तोकहुकवनविवेक ॥ ८९॥

स्वर्णकारकरताकनक, कारणप्रकटलखाय ॥
अलंकारकारजसुखद, गुणशोभासरसाय ॥९०॥
चामीकरभूषणअमित, करताकहतबभेद ॥
तुलसीजेगुरुगमरहित, ताहिरमितअतिखेद ९१॥
तननिमित्तजहँजोभयो, तहाँसोइपरमान ॥
जिनजानेमानेतहाँ, तुलसीकहहिंसुजान ॥९२॥
मृन्मयभाजनविविधविधि, करतामनभवरूप ॥
तुलसीजानेतेसुखद, गुरुगमज्ञानअनूप ॥९३॥
सबदेखतमृणभाजनहिं, कोइकोइलखतकुलाल ॥
जाकेमनकेरूपवह ,भाजनविलखुविशाल ॥९४॥
एकैरूपकुलालको, माटीएकअनूप ॥
भाजनअमितविशाललघु, सोकरतामनरूप ९५
जहाँरहतवरततहाँ,तुलसीनित्यस्वरूप॥
भूतनभावीताहिकहँ,अतिशयअमलअनूप॥९६॥
श्वाससमीरप्रत्यक्षअप, स्वच्छादरशलखात ॥
तुलसीरामप्रसादबिन, अविगतिजानिनजात ॥

तुलसीतलरहिजातहै, ध्रुततनअचलउपाधि ॥
यहगतितेहिलखिपरतजेहि,भईसुमतिशुठिसाधि॥
करताकारणकालके, योगकरममतजान ॥
पुनःकालकरतादुरत, कारणरहतप्रमान ॥९९॥
इति श्रीमद्गोसाईंस्वामीतुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकायांकर्म्मसिद्धांतयोगोनामपंचमःसर्गः ॥५॥

षष्ठःसर्गः ।

दोहा–जलथलतनगतहैसदा, तेतुलसीतिहँकाल॥
जन्ममरणसमुझेविना, भाषतसमनविशाल॥१॥
तौतुलसीकरतासदा, कारणशब्दनआन ॥
कारणसंज्ञासुखदुखद, बिनगुरुतेहिकिमिजान ॥
कारजरतकरतासमुझ, दुखसुखभोगतसोय ॥
तुलसीश्रीगुरुदेवबिन, दुखप्रददूरनहोय ॥ ३ ॥
कारणशब्दस्वरूपमें, संज्ञागुणभवजान ॥
करतासुरगुरुतेसुखद, तुलसीअपरनआन ॥ ४॥

गन्धविभावरिनीररस, सलिलअनलगतज्ञान ॥
वायुवेगकहँबिनलखे, बुधजनकहहिंप्रमान ॥५॥
अनुस्वारअक्षररहित, जानतहैंसबकोय ॥
कहँतुलसीजहँलगिवरण,तासुरहितनहिंहोय॥६॥
आदिहुअन्तहुहैसोई, तुलसीऔरनआन ॥
बिनदेखेसमुझेविना, किमिकोइकरैप्रमान ॥७॥
रहितबिन्दुसबवरणते, रेफसहितसबजान ॥
तुलसीस्वरसंयोगते, होतवरणपदमान ॥ ८ ॥
अनुस्वारसूक्षमयथा, तथावरणअस्थूल ॥
जोसूक्षमअस्थूलसो, तुलसीकबहुँनभूल ॥ ९ ॥
अनिलअनलपुनिसलिलरज,तनगततनवतहोय॥
बहुरिसोरजगतजलअनल,मरुतसहितरविसोय ॥
औरभेदसिद्धान्तयह, निरखुसुमतिकरुसोय ॥
तुलसीसुतभवयोगबिन, पितुसंज्ञानहिंहोय११॥
संज्ञाकहतबगुणसमुझ, सुनबशब्दपरमान ॥
देखबरूपविशेषहै, तुलसीवेषबखान ॥ १२ ॥

होतपितातेपुत्रजिमि, जानतकोकहुनाहिं ॥
जबलगिसुतपरसोनहीं, पितुपदलहैनताहिं १३॥
तिमिवरणनसंज्ञाकरे, वरणवरणसंयोग ॥
तुलसीहोयनवरणकर,जबलगिवरणवियोग१४॥
तुलसीदेखहुसकलकहँ, यहिविधिसुतआधीन ॥
पितुपदपरखिसुदृढ़भयो,कोउकोउपरमप्रवीन१५
जहँदेखोसुतपदसकल, भयोपितापदलोप ॥
तुलसीसोजानैसुई, जासुअसोलिकचोप ॥१६॥
ख्यातभुवनतिहुँलोकमहँ, महाप्रबलअतिसोइ ॥
जोकोइतेहिपाछेकरै, सोपरआगेहोइ ॥ १७ ॥
तुलसीहोतनहींकछुक, रहितभुवनव्यवहार ॥
तोहींतेअग्रजभयो,सबविधितेहिपरचार ॥ १८ ॥
भुवनदेखिभूलेसकल, भयअतिपरमअधीन ॥
तुलसीजेहिसमुझाइये,सोमनकरतमलीन ॥१९॥
मानतसोसांचोहिये, सुनतसुनावतवादि ॥
तुलसीतेसमुझतनहीं,जोपदअमलअनादि॥२०॥

जाहिकहतहैंसकलसो, जेहिकहतवसोऐन ॥
तुलसीताहिसकुझिहिये,अजहुँकरहुचितचैन॥२१

तुलसीजोहैसोनहीं,कहतआनसबकोय ॥
यहिविधिपरमविडम्बना,कहहुनकाकहँहोय२२॥

गुरुकरिबोसिद्धान्तयह, होययथारथबोध ॥
अनुचितउचितलखायउर,तुलसीमिटैविरोध २३

सतसंगतिकोफलयही, संशयलहैनलेश ॥
हैअस्थिरशुचिसरलचित,पावैपुनिनकलेश॥ २४

जोमरकोपदसबनको, जहँलगिसाधअसाध ॥
कवनहेतुउपदेशगुरु, सतसंगतिसबबाध ॥२५॥

जोभावीकहुहैनहीं, झूठोगुरुसतसंग ॥
ऐसिकुमतितेझूठगुरु, सन्तनकोपरसंग ॥ २६ ॥

जौलैंलखिनाहींपरत, तुलसीपरपदआप ॥
तौलगिसीहिविवशसकल, कहतपुत्रकोबाप॥ २७

जहँलगिसंज्ञावरणभौ, जासुकहेतेहोय ॥
तोतुलसीसेहैसबल, आनकहाकहुहोय ॥ २८ ॥

अपनेनैननदेखिजे, चलहिंसुमतिवरलोग ॥
तिनहिंनविपतिविषादरुज,तुलसीसुमतिसुयोग ॥
मृगाखगनचरज्ञानबिन, करतनहींपहिचान ॥
परवशशठहठतजतसुख, तुलसीफिरतभुलान३०॥
काहकहोतेहितोहिंके, जेहिउपदेशेउतात ॥
तुलसीकहतसोदुखसहत,समुझरहितहितबात ३१
बिनकाटेतरुवरयथा, मिटैकवनविधिछाँह ॥
त्योंतुलसीउपदेशबिन,निःसंशयकोउनाँह ॥३२
अपनोकरतबआपलखि,सुनिगुनिआपविचार ॥
तौतोहिंकहँदुखदाकहा,सुखदासुमतिअधार ॥३३
ब्राह्मणवरविद्याविनय,सुरतिविवेकनिधान ॥
पथरतिअलथअतीतमति,सहितदयाश्रुतिमान ॥
विनयछत्रशिरजासुके, प्रतिपदपरउपकार ॥
तुलसीसोक्षत्रीसही,रहितसकलव्यभिचार॥३५॥
बैशविनयमगपगधरै,हरैकटुकवरबैन ॥
सदयसदाशुचिसरलता,होयअचलसुखऐन ३६॥

शूद्रक्षुद्रपथपरिहरै,हृदयविप्रपदमान ॥
तुलसीमनसमतासुमति,सकलजीवसमजान॥३७
हेतुवरणवरशुचिरहनि, रसनिरासस्रुखसार ॥
चाहनकामसुरानरस,तुलसीसुदृढ़विचार॥३८॥
यथालाभसन्तोषरत,गृहमगवनसगरीत ॥
सोतुलसीसुखमेंसदा,जिनतनुविभवविनीत॥३९
रहैजहांविचरैतहां, कभीकहूँकछुनाहिं ॥.
तुलसीतहँआनन्दसँग,जातयथासँगछाहिं॥ ४०॥
करतकर्मजेहिकोसदा, सोमनदुखदातार ॥
तुलसीजोसमुझेमनहिं,तोतेहितजैविचार ॥४१॥
कहतसुनतसमुझतलखत, तेहितेविपतिनजाय ॥
तुलसीसबतेविलगहैं, जबतेनहिंठहराय ॥ ४२ ॥
सुनतकोटिकोटिनकहत, कौड़ीहाथनएक ॥
देखतसकलपुराणश्रुति,तापररहितविवेक॥ ४३॥
समुझतहैसन्तोषधन, यातेअधिकनआन ॥
गहतनहींतुलसीकहत, तातेअबुधमलान॥ ४४ ॥

कहाहोतदेखेकहे, सुनिसमुझेसबरीति ॥
तुलसीजबलगिहोतनहिं,सुखदरामपदप्रीति ॥४५
कोटिनसाधनकेकिये, अन्तरमलनहिंजाय ॥
तुलसीजौलगिसकलगुण,सहितनकर्मनशाय ४६
चाहबीजबलगिसकल, तबलगिसाधनसार ॥
तामहँअमितकलेशकर, तुलसीदेखविचार ॥४७
चाहकियेदुखियासकल, ब्रह्मादिकसबकोय ॥
निश्चलतातुलसीकठिन, रामकृपावशहोय॥४८॥
अपनोकर्मनआपकहँ, भलोमन्दजेहिकाल ॥
तबजानबतुलसीभई; अतिशयबुद्धिविशाल ४९
तुलसीजबलगिलखिपरत, देहप्राणकोभेद ॥
तबलगिकैसेकैमिटै,करमजनितबहुखेद ॥ ५० ॥
जोइदेहसोइप्राणहै, प्राणदेहनहिंदोय ॥
तुलसीजोलखिपायहै,सोनिरद्वयनहिंहोय॥५१॥
तुलसीतेझूठोभयो, का:झूठेसँगप्रीति ॥
हैसांचोह्वैसांचजब, गहैरामकीरीति ॥ ५२ ॥

झूँठीरचनासाँचहै, रचतनहींअलसात ॥
बरजतहूझगरतबिहठि; नेकनबूझतबात ॥ ५३॥
करसखरीकरमोहथल, अंकचराचरजाल ॥
हरतभरतभरहरगनत,जगतज्योतिषीकाल॥५४॥
कहनकालकिलसकलबुध, ताकरयहव्यवहार ॥
उत्पतिस्थितिलयहोतहै,सकलतासुअनुहार५५॥
अंकुरकिसलयदलविपुल, शाखायुतवरमूल ॥
फूलिफरतऋतुअनुहरत,तुलसीसकलसतूल ५६॥
कहतबकरतबसकलतेहि, ताहिरहतनहिंआन ॥
जाननमाननआनविधि,अनूमानअभिमान५७॥
हानिलाभजयविधिविजय, ज्ञानदानसनमान ॥
खानपानशुचिरुचिअशुचि,तुलसीविदितविधान
शालकपालकसमविषम, रमभमगमगतिज्ञान ॥
अटघटलटनटनादिजट, तुलसीरहितनजान५९॥
कठिनकरमकरणीकथन, करताकारककाम ॥
कायकष्टकारणकरम, होतकालसमशाम ॥६०॥

खबरआतमाबोधबर, खरबिनकबहुनहोय ॥
तुलसीखसमबिहीनजे, तेखरतरनहिंसोय॥ ६१ ॥
चितरतिवितव्यवहारितविधि,अगमसुगमजयनीच
धीरधरमधारणहरण, तुलसीपरतनबीच ॥ ६२ ॥
शब्दरूपविवरणविशद,तासुयोगभवनाम ॥
करतारूपबहुजातितेहि, संज्ञासबगुणधाम॥६३॥
नामजातिगुणदेखिकै, भयोप्रबलउरभर्म ॥
तुलसीगुरुउपदेशबिन, जानिसकैकोमर्म ॥ ६४ ॥
अपनकर्मधरमानिकै, आपबँधोसबकोय ॥
कारजरतकरताभयो,आपनसमुझतसोय ॥६५ ॥
कोकरताकारणलखै, कारजअगमप्रभाव ॥
जोजहँसोतहँतरहरष, तुलसीसहजसुभाव ॥६६॥
तुलसीबिनगुरुकोलखे,वर्त्तमानविधिरीति ॥
कहुकेहिकारणतेभयो,सूर्यउष्णशशिशीत ॥६७॥
करताकारणकर्मते, परपरआतमज्ञान ॥
होतनबिनउपदेशगुरु, जोषटवेदपुरान ॥ ६८

प्रथमज्ञानसमुझेनहीं, विधिनिषेधव्यवहार ॥
उचितानुचितहिहेरिधारि, करतबकरियसँभार६९
जबमनमहठहरायविधि, श्रीगुरुवरपरसाद ॥
इहिविधिपरमातमलखै, तुलसीमिटैविषाद ७०॥
बरबसकरताविरोधहठि, होनचहतअकहीन ॥
गहिगतिबकवृकश्वानइव, तुलसीपरमप्रवीन७१
आक्कर्मभेषजविदित, लखतनहींमतिहीनः॥
तुलसीशठअकवशबिहठि, दिनदिनदीनमलीन॥
करताहीतेकर्मयुग, सोगुणदोषसरूप ॥
करतभोगकरतबयथा, होयरंककिनभूप ॥ ७३॥
वेदपुराणरुशास्त्रयुत, निजबुधिवलअनुमान ॥
निजनिजकरिकरिहैबहुरि, कहुतुलसीपरमान७४
विविधप्रकारकथनकरै, जाहियथाभवमान ॥
तुलसीसुगुरुप्रसादबलि,कोउकोउकहतप्रमान.७५
उरडरअतिलघुहोनकी, भवलघुसुरतिभुलान ॥
स्वर्गलाहलखिपरतनहिं, लखतलोहकोहान७६

नैनदोषनिजकहतनहिं,विविधबनावतबात ॥
सहतजानितुलसीविपति, तदपिननेकलजात ७७
करतचातुरीमोहवश, लखतननिजहितहान ॥
शुकमरकटइवगहतहठ,तुलसीपरमसुजान॥७८॥
दुखियासकलप्रकारशठ, समुझिपरतहीनाहिं ॥
लखतनकण्टकमीनजिमि,अशनभषतभ्रमनाहिं७९
तुलसीनिजमनकामना, चहतशून्यकहँसेय ॥
वचनगायसबकेविविध,कहहुपयसकहिदेय८०॥
बातहिबातहिबनिपरै, बातहिबातनशाय ॥
बातहिआदिहिदीपभव,बातहिअन्तबताय॥८१॥
बातहितेबनिआवई, बातहितेबनिजात ॥
बातहितेबरबरमिलत; बातहितेबौरात ॥ ८२ ॥
बातबिनाअतिशयविकल, बातहितेहरषात ॥
बनतबातबरबाततेे, करतबातबरघात ॥ ८३ ॥
तुलसीजानेबातबिन,बिगरतहरइकबात ॥
अनजानेदुखबातके, जानिपरतकुशलात ॥८४॥

प्रेमवैरऔगुण्यअघ, यशअपयशजयहान ॥
बातबीजइनसबनको,तुलसीकहहिंसुजान॥८५॥
सदाभजनगुरुसाधुद्विज, जीवदयासमजान ॥
सुखदसुनैरतसत्यव्रत, स्वर्गसप्तसोपान॥ ८६ ॥
बंचकविधिरतनरतनय,विधिहिंमाअतिलीन ॥
तुलसीजगमहँविदितवर,नरकनिशेनीतीन ८७॥
जेनरजगगुणदोषयुत; तुलसीवदतविचार ॥
कबहुँसुखीकबहूँदुखित,उदयअस्तव्यवहार८८॥
कारजजगकेयुगलतम, कालअचलबलवान ॥
त्रिविधविकलतेतेहटहिं,तुलसीकहहिंप्रमान८९॥
अनुभवअमलअनूपगुरु, कछुकशास्त्रगतिहोय ॥
बचैकालक्रमदोषते, कहहिंसुबुधसबकोय॥९०॥
सबविधिपूरणधामवर, रामअपरनहिंआन ॥
ताकीकृपाकटाक्षते, होतहियेदृढज्ञान॥ ९१ ॥
सोस्वामीसोतरसखा, सोवरसुखदातार ॥
तातमातआपदहरण, सोआसमयअधार ॥९२॥

सुखेदद्दुखदकारजकठिन, जानतकोतेहिनाहिं ॥
जानेहुपरबिनगुरुकृपा, करतबबनतनकाहिं॥९३॥
तुलसीसकलप्रधानहै, बेदविदितसुखधाम ॥
तामहँसमुझबकठिनअति,युगलभेदगुणनाम ९४॥
नासकहतसुखहोतहै, नामकहतदुखजात ॥
नामकहतसुखजातदुरि, नामकहतदुखखात९५॥
नामकहतवैकुण्ठसुख, नामकहतअघखान ॥
तुलसीतोतेउरसमुझि, करहुनामपहिचान ॥९६॥
चारोंचौदहअष्टदश, रससमुझबभरिपूर ॥
नामभेदसमुझेबिना, सकलसमुझमहँधूर ॥ ९७॥
बारदिवसनिशिमाससित, असितबरषपरमान ॥
उत्तरदक्षिणआशरवि, भेदसकलमहँजान ॥९८॥
कर्मशुभाशुभमित्रअरि, रोदनहँसनबखान ॥
औरभेदअतिअमितहैं,कहँलगिकहियप्रमान९९॥
जहँलगिजनदेखबसुनब, समुझबकहबसुरीत॥
भेदरहितकछुहैनहीं, तुलसी हिंविनीत॥१००॥

भेदयाहिविधिनाममहँ, बिनगुरुजाननकोय १०१
तुलसीकहहिविनीतवर, ज्योंविरंचिशिवहोय ॥

इति श्रीमद्गोसाईंस्वामीतुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकायांज्ञानसिद्धान्तयोगोनामषष्ठःसर्गः ॥ ६ ॥

सप्तमःसर्गः ।

दोहा-तिनहिंपढेतिनहींसुने, तिनहिंसुमतिपरकास
जिनआशापाछेकरे, गहेअलखनीसास ॥ १ ॥
तबलगियोगीजगतगुरु, जबलगिरहैनिरास ॥
जबआशासनमेंजगी, जगगुरुयोगीदास ॥ २ ॥
हितपुनीतस्वारथसबहि, अहितअशुचिबिनचाउ॥
निजमुखमाणिकसमदशन, भूमिपरतभोहाउ ॥ ३ ॥
निजगुणघटतननागनग, हर्षिनपहिरतकोल ॥
गुञ्जाप्रभुभूषणकरे, तातेबढेनमोल ॥ ४ ॥
देइसुमनकरिवासतिल, परिहरिखरिरसलेत ॥
स्वारथहितभूतलभरे, मनमेंचकतनसेत ॥ ५ ॥

असुवनपथिकनिराशते, तटभुइसजलसरूप ॥
तुलसीकिनबंचेनहीं, इनसबथलके कूप ॥ ६ ॥
तुलसीमित्रमहासुखद, सबहिमित्रकीचाउ ॥
निकटभयेविलसतसुखप, एकछपाकरछाउ ॥७॥
मित्रकोप्रबरतरसुखद, अनहिनमृदुलकराल ॥
द्रुमदलशिशिरसुखातसब, सहनिदाघअतिलाल ८
खलनेरेगुणमाननहिं, मेटहिदातावोप ॥
जिमिजलतुलसीदेतरवि, जलदकरततेहिलोप॥९॥
वर्षतहर्षतलोगसब, कर्षतलखतनकोय ॥
तुलसीभूपतिभानुसम, प्रजाभागवशहोय ॥१०॥
मालीभानुकृशानुसम, नीतिनिपुणमहिपाल ॥
प्रजाभागवशहोहिंगे, कबहिंकबहिंकलिकाल ११॥
समयपरेसुपुरुषनरन, लघुकरिगनियनकोय ॥
नायकपीपरबीजसम, बचैतोतरुवरहोय ॥१२ ॥
बडेरामरतजगतमें, कैपरहितचितजाहि ॥
प्रेमपैजनिबहीजिन्हें, बड़ोसोलखहीचाहि ॥१३॥

तुलसीसन्तनतेसुनै, सन्ततइहैविचार ॥
तनधनचञ्चलअचलजग, युगयुगपरउपकार १४॥
ऊँचहिआपदविभववर, नीचहिदत्तनहोय ॥
हानिवृद्धिद्विजराजकहँ,नहितारागणकोय॥१५॥
बड़ेरतहिंलघुकेगुणहिं, तुलसीलघुहिनहेत ॥
गुञ्जातेमुक्ताअरुण, गुञ्जाहोतनश्वेत ॥ १६ ॥
होहिंबडेलघुसमयसह, तोलघुसकहिनकाढि ॥
चन्द्रदूबरोकूबरो, तऊनखततेबाढ़ि ॥ १७ ॥
उरगतुरगनारीनृपति, नरनीचोहथियार ॥
तुलसीपरखतरहबनित,इनाहिंनपलटतवार॥१८॥
दुर्जनआपसमानकरि, कोराखैहितलागि ॥
तपततोयसहजाहिपुनि, पलटिबतावतआगि१९
मन्त्रतन्त्रतन्त्रीत्रिया, पुरुषअश्वधनपाठ ॥
पुनिगुनयोगवियोगते, तुरतजाहिंयेआठ ॥ २०॥
नीचनिचाईनहिंतजै, जोपावहिसतसंग ॥
तुलसीचन्दनविटपबासि,विनविषभयनभुजंग२१

दुर्जनदर्पणसमसदा, करिदेखोहियदौर ॥
सन्मुखकीगतिऔरहै, विमुखभयेकछुऔर ॥ २२ ॥
मित्रकअवगुणमित्रको, परपहँभाषतनाहिं ॥
कूपछांहजिमिआपनी, राखतआपहिमाहिं ॥ २३ ॥
तुलसीसोसमरथसुमति, सुकृतीसाधुसुजान ॥
जोविचारिव्यवहरतजग, खर्चलाभअनुमान २४
सीखसखासेवकसचिव, सुतियसिखावनसांच ॥
सुनिकरियेपुनिपरिहरिय, परमनरंजनपांच २५ ॥
पुरहिनिजरुचिकाजकरि, रुष्टहिकाजबिगारि ॥
तियातनयसेवकसखा, मनकेकण्टकचारि २६ ॥
नारिनगरभोजनसचिव, सेवकसखाअगार ॥
सरसपरिहरेरंगरस, निरसविषादविकार ॥ २७ ॥
दीरघरोगीदारिदी, कटुवचलोलुपलोग ॥
तुलसीप्राणसमानज्यों, तुरतत्यागिबेयोग ॥ २८ ॥
घायलगेलोहाललकि, खींचिउलेइयनीच ॥
समरथपापीसोंबयर, तीनबेसाहीमीच ॥ २९ ॥

तुलसीस्वारथसामुहे, परमारथतनपीठि ॥
अन्धकहेदुखपावक्काहि, डिठियारेहियडीठि ३०
अनसमुझैनेशोचबर, अवशिसमुझियेआप ॥
तुलसीआपनसमुझिबिन,पलपलपरपरिताप ३१
कूपखनहिंमन्दिरजरत, लावहिंधारिबबूर ॥
बोयेलुनचहसमयाबिन, कुमतिशिरोमणिक्रूर ३२॥
निडरअनयकरिअनकुशल, बीसबाहुसमहोय ॥
गयोगयोकहसुमतिजन, भयोकुमतिकहकोय३३॥
बहुसुतबहुरुचिबहुवचन, बहुअचारव्यवहार ॥
इनकोभलोमनाइबो, इहअज्ञानअपार ॥ ३४ ॥
अपयशयोगकिजानकी, मणिचोरीकीकान्ह ॥
तुलसीलोगरिझाइबो, करसिकातिबोनान्ह३५
मांगिमधुकरीखातजे, सोवतपांवपसारि ॥
पापप्रतिष्ठाबढ़िपरी, तुलसीबाढ़ीरारि ॥ ३६ ।
लहीआँखिकबआँधरहिं, बांझपूतकबजाय
कबकोढ़ीकायालही, जगबहराइचजाय ॥३७॥

याजगकीबिपरीतिगति, काहिकहौंसमुझाइ ॥
जलजलिगोझखबांधिगो, जनतुलसीमुसुकाइ ३८
कैजूझिबोकिबूझिबो, दानकिकायकलेश ॥
चारिचारुपरलोकपथ, यथायोगउपदेश ॥३९॥
सुधाकिषानसरवेदबन, मतेखेतसबसींच ॥
तुलसीकृषिगतिजानिबो, उत्तममध्यमनीच ४० ॥
सहिकुबोलसासतिअसम, पायअनटअपमान ॥
तुलसीधर्मनपरिहरहिं, तेवरसन्तसुजान ॥४१॥
अनहितज्योंपरहितकिये, आपनहिततमजान ॥
तुलसीचारुविचारमति, करियकाजसमान ४२
मिथ्यामाहुरसजनकहँ, खलहिंगरलसमसाँच ॥
तुलसीपरसिपरातजिमि, पारदपावकआँच ४३
तुलसीखलवाणीविमल, सुनिसमुझबहियहेरि ॥
रामराजबाधकभई, मन्दमन्थराचेरि ॥ ४४ ॥
दानदयादिकशुद्धके, वीरधीरनहिंआन ॥
तुलसीकहहिंविनीतइति, तेनरवरपरिमान ४५ ॥

तुलसीसाथीविपतिके, विद्याविनयविवेक ॥
सा ससुकृतससत्यव्रत, रामभरोसोएक ॥४६॥
तुलसीअसमयकेसखा, साहसधर्मविचार ॥
सुकृतशीलस्वभावरिज, रामशरणआधार॥४७॥
विद्याविनयविवेकरति, रीतिजासुउरहोय ॥
रामपरायणसोसदा, आपदताहिनकोय ॥ ४८ ॥
बिनप्रपञ्चखलुभीखभलि, नहिंफलकियकलेश ॥
वामनबलिसोंलीन्हिछलि, दीन्हसबहिउपदेश ॥
बिबुधकाजवामनबलिहि,छलोभलोजियजानि॥
प्रभुतातजिवशभेतदपि, मनतेगइनगलानि ५०॥
बढ़बढ़तेछलकरैं, जनमकनौडहोहिं ॥
तुलसीश्रीपतिशिरलसैं,बलिवामनगतिसाहिं ५१
खलउपकारविकारफल, तुलसीजानजहान ॥
मेखटमरकटवणिकवक, कथासत्यउपखान ५२
ज्योंमूरखउपदेशके, होतेयोगजहान ॥
दुर्योधनकहबोधकिन, आयेश्यामसुजान ५३ ॥
हितपरबढ़तविरोधजब, अनहितपरअपमान ॥

रामविमुखविधिबामगति, सगुनअघायअमान ॥
साहसहीसिखकोपवश, कियेकठिनपरिपाक ॥
शठसंकटभाजनभये, हठिकुजतीकपिकाक ९५॥
मारिसौंहकरिखोजलें, करिमतसबबिनत्रास ॥
मुयेनीचबिनसीचते, जेइनकेविश्वास ॥ ९६ ॥
रीकआपनीबूझपर, खीझविचारविहीन ॥
तेउपदेशनसानहीं, मोहमहोदधिमीन ॥ ९७ ॥
समुझिसुनीतकुनीतरत, जागतहीरहसोय ॥
उपदेशिबोजगाइबो, तुलसीउचितनहोय॥९८॥
परमारथपथमतसमुझि, लसतविषयलपटान ॥
उतरिचितातेअधजरी, मानहुँसतीपरान ॥९९॥
तजतअमियउपदेशगुरु, भजतविषयविषखान ॥
चन्द्रकिरणधोखेपयस, चाटतजिमिशठश्वान१००
सुरसदनतीरथपुरिन, निपटकुचालिकुसाज ॥
मनहुँमवासेमारिकलि, राजतसहितसमाज १०१॥
चोरचतुरबटमारभट, प्रभुप्रियभरुआभण्ड ॥
सबभक्षीपरमारथी, कलिसुपन्थपाखण्ड ॥१०२॥

गोलगँवारनृपालकलि,जमनमहामहिपाल ॥
सामनदामनभेदकलि, केवलदण्डकराल ॥६३॥
कालतोपचीतुपकमहि, दारूअयनकराल ॥
पापपलीताकठिनगुरु, गोलापुहुमीपाल ॥६४॥
रागरोषगुणदोषको, साक्षीहृदयसरोज ॥
तुलसीविकसतमित्रलखि सकुचतदेखिमनोज ॥
वैरसनेहसयानपहि, तुलसीजोनहिंजान ॥
तेकिप्रेमपगमगधरत, पशुविनपूंछबखान ॥६६॥
रामदासयहजायकै, जोनरकथहिसयान ॥
तुलसीअपनेखांडमहँ, खाकमिलावतश्वान६७॥
त्रिविधिएकविधिप्रभुअगुण, प्रजहिंसँवारहिंराउ॥
करतेहोतकृपाणको, कठिनघोरघनघाउ ॥६८ ॥
कालविलोकतईशरुख, भानुकालअनुहार ॥
रविहिराहुराजहिंप्रजा, बुधव्यवहरहिबिचार६९॥
यथाअमलपावनपवन, पापसुसंगकुसंग ॥
कहियसुवासकुवासतिमि, कालमहीशप्रसंग७०॥
मलउचलतपथशोचमय, नृपनियोगनयनेम ॥

कुतियसुभूषणभूषियत, लोहनिवारितहेम ॥७१॥
सुधाकुनाजकुनाजपल, आमअशनसमजान ॥
सुप्रभुप्रजाहितलेहिकर, सामादिकअनुमान७२॥
पाकेपकयेविटपदल, उत्तममध्यमनीच ॥
फलनरलहहिनरेशतिमि,करिविचारमनबीच७३
धरणिधेनुचरिधरमतन, प्रजासुवत्सपन्हाय ॥
हाथकछूनहिलागिहै, कियेगोष्ठकीगाय ॥७४॥
टंकटंकहैपरतगिरि,शाखासहसखजूरि ॥
गरहिकुनृपकरिकरिकुनय, सोकुचालभुविभूरि॥
भूमिरुचिररावणसभा, अङ्गदपदमहिपाल ॥
धर्मरामनयसीमबल,अचलहोततिहुँकाल॥७६॥
प्रीतिरामपदनीतिरत, धर्मप्रतीतस्वभाय ॥
प्रभुहिनप्रभुतापरिहरै, कबहुँवचनमनकाय ७७॥
करकेकरमनकेमनहिं, वचनवचनजियजानि ॥
भूपतिभलहिनपरिहरहिं,विजयविभूतिसयानि ॥
गोलीबाणसुमत्तसुर, समुझिउलटिगतिदेखु ॥
उत्तममध्यमनीचप्रभु, वचनविचारुविशेखु ७९

शत्रुसयानेसलिलइव, राखशीशअपुनाव ॥
बूड़तलखिडगमगतअति, चपरिचहूँदिशिधाव८०
रय्यतराजसमाजघर, तनधनधर्मसुबाहु ॥
सत्यसुसचिवहिसौंपिसुख, बिलसहिंनिजनरनाहु
रसनामन्त्रीदशनजन, तोषपोषसबकाज ॥
प्रभुकैसेनृपदानवृक, बालकराजसमाज ॥ ८२ ॥
लकरीडौवाकरछुली, सरसकाजअनुहारि ॥
सुप्रभुजुगहहिंनपरिहरहिं, सेवकसखाविचारि८३
प्रभुसमीपछोटेबड़े, अचलहोहिबलवान॥
तुलसीविदितविलोकहीं, करअँगुलीअनुमान ॥
तुलसीभलवरणतबढ़त, निजमूलहिअनुकूल ॥
सकलभाँतिसबकहँसुखद,दलनसहितबिनफूल८५
सधनसगुणसधरमसगण, सजनसुसबलमहीप ॥
तुलसीजेअभिमानबिन, तेत्रिभुवनकेदीप॥८६॥
साधनसमयसुसिद्धलहि, उभयमूलअनुकूल ॥
तुलसीतीनोंसमयसम, तेमहिमङ्गलमूल ॥८७॥
रामायणअनुहरतशिष, जगभौभारतरीति ॥

तुलसीशठकीकोसुनै, कलिकुचालिपरप्रीति ८८
सुहितसुखदगुणयुतसदा, कालयोगदुखहोय ॥
घरधनजारतअनलजिमि,त्यागेसुखनहिंकोय ८९
तुलसीसरवरखम्भजिमि, तिमिचेतनपटमाहिं ॥
नहिंसूझतपनहुतनसो, सम्मुझसुबुधजनताहिं ९०
तुलसीझगराबड़ेनके, बीचपरहुजनिधाय ॥
लहैलोहपाहनदोऊ, बीचरुईजरिजाय ॥ ९१ ॥
अर्थआदिहनपरिहरहु, तुलसीसहितविचार ॥
अन्तगहनसबकहँसुने, सन्तनमतसुखसार ९२॥
गहुउपकारविचारपद, माफलहानिविमूल ॥
अहोजानुतुलसीयतन; बिनजानेइवशूल॥९३ ॥
नीचनिरावहिंनिरसतरु, तुलसीसींचहिऊख ॥
पोषतपयदसमानजल, विषयऊखकेरूख ॥९४॥
लोकवेदहूँलौंदगी, नामभूलकोपोच ॥
धर्मराजयमराजयम, कहतसकोचनशोच॥९५॥
तुलसीदेवलरामके, लागेलाखकरोर ॥
काकअभागेहगिभरे, महिमाभयउनथोर ॥९६॥

भलोकहहिंजानेबिना, कीअथवाअपवाद ॥
तुलसीगांड़रजानिजिय,करहुनहर्षविषाद॥९७॥
तनधनमहिमाधर्मजेहि, जाकहँसहअभिमान ॥
तुलसीजियतविडम्बना, परिणामहुगतिजान९८
बडोविबुधदर्बारते, भूमिभूपदर्बार ॥
जापकपूजकदेखियत, सहतनिरादरभार ॥९९ ॥
खगमृगमीनपुनीतकिय, बलहुरामनेपाल ॥
कुनइगालरावणघरहि,सुखदबन्धुकियकाल१००
रामलपणविजयीभये, सुनहुगरीबनिवाज ॥
सुखरबालिरावणगये,घरहीसहितसमाज॥१०१॥
द्वारेटाटनदेसकहिं, तुलसीजेनरनीच ॥
निदरहिंबलिहरिचन्दकहँ, किहुकाकरनदधीच॥
तुलसीनिजकीरतिचहहिं, परकीरतिकहँखोय ॥
तिनकेमुहँमसिलागिहै,मिटहिनमरिहैधोय १०३
नीचचंगसमजानिबो, सुनिलखितुलसीदास ॥
ढीलदेतमहिगिरिपरत, खैंचतचढतअकाश१०४
सहवीसीकांचीभषे,पुरजनपाकप्रवीन ॥

कालक्षेपकिहिविधिकरै,तुलसीखगमृगमीन १०५
बड़ेपापबाढेकिये, छोटेकरतलजात ॥
तुलसीतापरसुखचहत, विधिपरबहुतरिसात १०६
सुमतिनिवारहिंपरिहरहिं, दलसुमनहुसंग्राम ॥
सकलगयेतनबिनभये, साखीयादवकाम॥ १०७॥
कलहनजानबिछोटकरि, कठिनपरमपरिणाम ॥
लगतअनलअतिनीचघर, जरतघनिकधनधाम॥
बूझेतेभलबूझिबो, भलोजीततेहारि ॥
जहाँजाइजहँडाइबो, भलोजोकियविचारि १०९
तुलसीतीनप्रकारते, हितअनहितपहिचान ॥
बरबसपरेपरोसबश, परेमामलाजान ॥ ११० ॥
दुर्जनवदनकमानसम, वचनविमुञ्चततीर ॥
सज्जनउरबेधतनहिं, क्षमासमाहशरीर ॥१११॥
कौरवपाण्डवजानिबो, क्रोधक्षमाकेसीस ॥
पाँचहिमारिनशौसके, सबोनिपातेसीस ११२॥
जोमधुदीन्हेतेमरै, माहुरदेउनताउ ॥
जगजितिहारेपरशुधर, हारिजितेरघुराउ ११३॥

क्रोधनरसनाखोलिये, वरुखोलबतरवारि ॥
सुनतमधुरपरिणामहित, बोलतवचनविचारि ॥
तुलसीमीठोसमयते, मांगीमिलेजुमीच ॥
सुधासुधाकरसमयबिन, कालकूटतेनीच ११५॥
पाईखेतीलगनबड़ि, ऋणकुव्याजमगखेतु ॥
बैरआपतेबड़नते, कियोपांचदुखहेतु ॥ ११६ ॥
रीझखीझगुरुदेतशिष, शिषहिसुसाहबसाध ॥
तोरिखायफलहोयभल, तरुकाटेअपराध ११७॥
चढोबबूरहिचंगजिमि, ज्ञानतेशोकसमाज ॥
कर्मधर्मसुखसम्पदा, तिमिजानिबोकुराज ११८॥
पेटनफूटतबिनकहे, कहेनलागतढेर ॥
बोलबवचनविचारयुत, समुझिसुफेरकुफेर ११९॥
प्रीतिसगाईसकलविधि, बनिजउपायअनेक ॥
कलबलछलकलिमलमलिन, डहकतएकहिएक ॥
दम्भसहितकलिधर्मसब, छलसमेतव्यवहार ॥
स्वारथसहितसनेहसब, रुचिअनुहरतअचार ॥
धातुबधीनिरुपाधिवर, सद्गुरुलाभसुमीत ॥

दम्भदरशकलिकालमहँ,पोथिनसुननसुनीत १२२
फोरहिंमूरखशिलसदन, लागेअढुकपहार ॥
कायरकूरकपूतकलि, घरघरसरिसडहार १२३ ॥
ज्योंजगदीशतोअतिभलो, ज्योंमहीशतोभाग ॥
जन्मजन्मतुलसीचहत, रामचरणअनुराग १२४
काभाषाकासंसकृत, विभवचाहियेसांच ॥
कामतोआवेकामरी, कालैकरियकमाच १२५॥
वरणविशदमुक्तासरिस, अर्थसूत्रसमतूल ॥
सतसैयाजगवरविशद, गुणशोभासुखमूल १२६॥
वरम,लाबालासुमति, उरधारैयुतनेह ॥
सुखशोभासरसायनित, लहैरामपतिगेह॥१२७॥
भूपकहहिंलघुगुणिनकहँ, गुणीकहहिंलघुभूप ॥
महिगिरिगतदोउलखतजिमि, तुलसीखरबसरूप
दोहाचारुविचारुचलु, परिहरिवादविवाद ॥
सुकृतसीमस्वारथअवधि, परमारथमर्याद१२९॥

इति श्रीमद्गोसाईंस्वामितुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकायांराजनीतिप्रस्ताववर्णनंनामसप्तमःसर्गः ॥७॥ इति तुलसी सतसई समाप्त ।